हँसती दुनिया

एकता में शक्ति

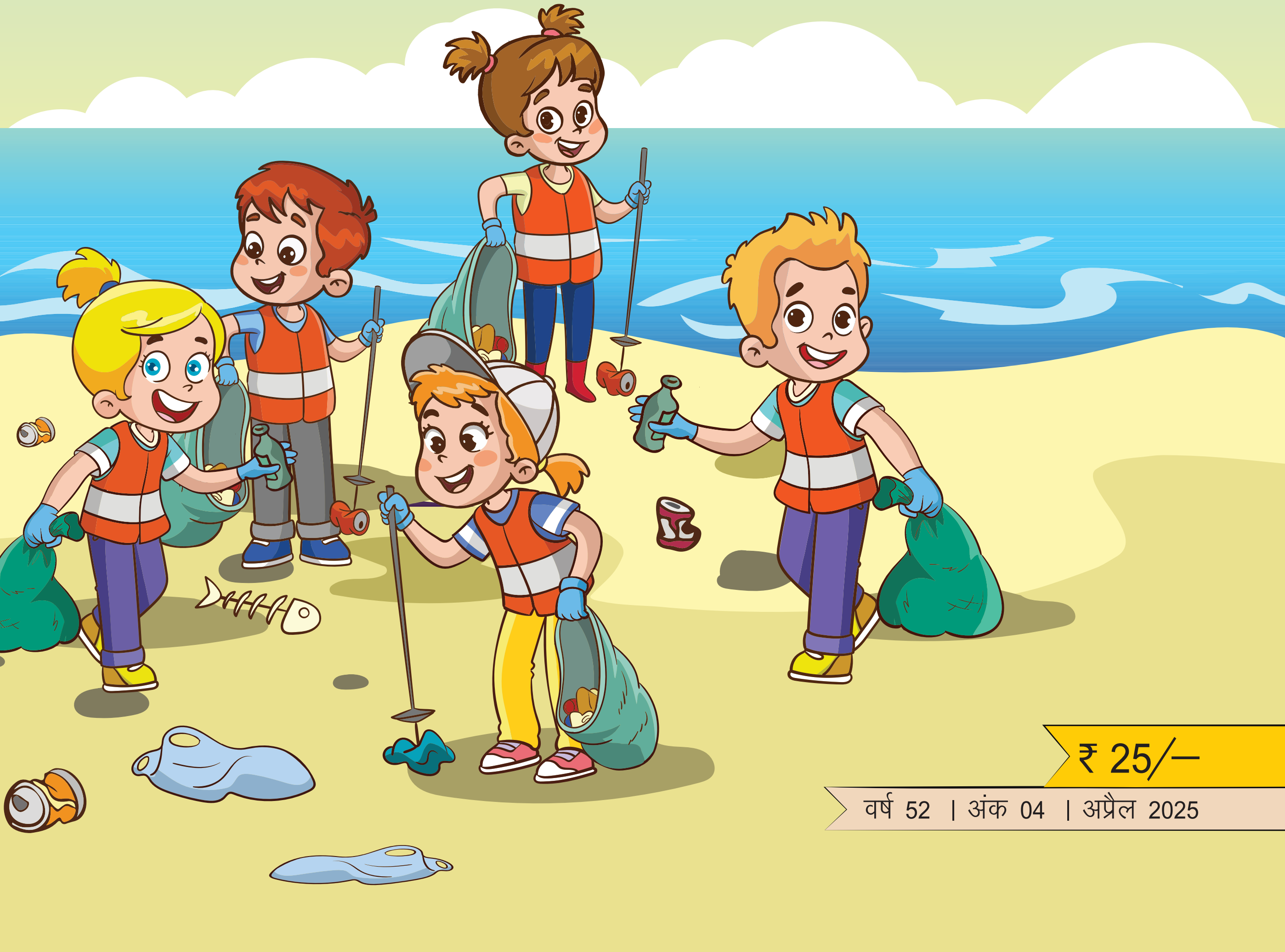

₹ 25/–

वर्ष 52 | अंक 04 | अप्रैल 2025

हँसती दुनिया

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री राकेश मुटरेजा
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–110009 हेतु
एम. पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी मण्डल (रजि.) एडमिनिस्ट्रेटिव
ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्पलेक्स,
दिल्ली–110009 से प्रकाशित किया।

वर्ष 52 ◈ अंक 04 ◈ अप्रैल 2025 ◈ पृष्ठ 44

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी व मराठी में प्रकाशित)

मुख्य सम्पादक
डॉ॰ विजय शर्मा

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

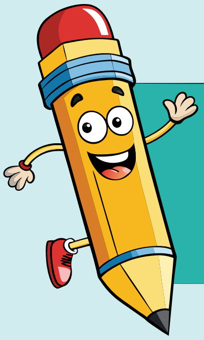

हाथ में पेन्सिल लीजिये, हँसती दुनिया पढ़िये
दुनिया के प्यारे बच्चो, सदा हँसते रहिये

लेखक के विचारों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

इस अंक में

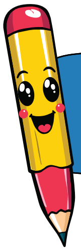

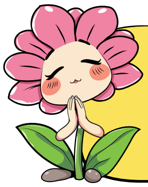
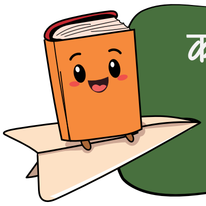

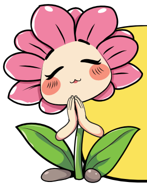
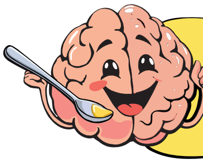

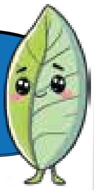

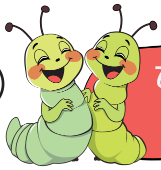

संपादकीय 4
चलो घूमने 31
मस्तीभरी कहानी 5
कहानी ने कहा 19
प्रेरक प्रसंग 33
कहानी चली पिकनिक 7
जंगल मंगल 22
फूलों जैसे लोग 35
प्रेरक प्रसंग 10
बुद्धि की खुराक 24
कविता 37
बहुत साल पहले 12
NATURE टीचर 27
कहानी जगत 38
तारों की दुनिया 14
अपनी प्रयोगशाला 28
एक समय की बात है 41
कविता 16
पढ़ो और हँसो 30

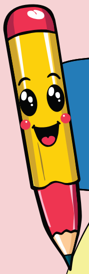

संपादकीय

एकत्व

एकता का एक सांकेतिक उदाहरण हम सभी ने सुना भी है और समझाने के लिए उसका उपयोग भी करते आए हैं। एक लकड़ी को आसानी से तोड़ा जा सकता है परन्तु उन्हीं लकड़ियों के गट्ठर को एक व्यक्ति नहीं तोड़ सकता। यह संगठित रहने का ही एक पहलू है। एकता और संगठन के और भी बहुत पहलू हैं। बिना संगठन के, एकता के हम अकेले कोई भी कार्य नहीं कर सकते क्योंकि हर कार्य करने के लिए कोई न कोई साधन तो अपनाना ही पड़ता है। उस साधन का उपयोग तो मैं करता हूँ पर जब साधन और मैं इकट्ठे होते हैं तभी कार्य आसान होता है। मुझे लिखने के लिए पेन और पेपर की आवश्यकता थी, फिर लिखने के लिए मैंने उंगलियों का सहारा लिया और लिखना शुरू किया। फिर विचार आया कि मुझे लिखना कैसे आया, किसने मुझे लिखना सिखाया। पहले भाषा का ज्ञान किसी ने कराया। उसके लिए माता–पिता, गुरु–शिक्षक, स्कूल, विश्वविद्यालय सभी का योगदान रहा। पेन, पेपर और स्याही भी जिन्होंने बनाई, उनका भी सहयोग दिखाई देने लगा। बिना पेड़–पौधों के पेपर नहीं बन पाता। स्याही के लिए पानी, कलर (रंग), अनेकों केमिकल, फिर उनका सम्मिश्रण बन जाना और मेरा पास पहुँचाने में अनेकों व्यक्तियों, प्राकृतिक, संसाधनों, कारखानों का भी सहयोग रहा। यह भी केवल एक और पहलू ही है।

हाथों से लिखा तो जा सकता है, लेकिन अगर आँखों का सहयोग न हो तो और भी मुश्किल हो जाएगी। आंखें देख रही हैं, हाथ लिखने को तत्पर हैं फिर भी लिखा नहीं जा रहा तो इसके लिए पहले जानना होगा कि मैं लिखना क्या चाहता हूँ। इसके लिए मुझे बुद्धि का उपयोग करना होगा। इनमें सबसे अधिक जरूरत इस बात की होगी कि मेरा मन क्या कहता है? अगर मेरा मन नहीं है तो मैं ढंग से अपनी बात न लिख पाऊंगा और न ही कह पाऊंगा। सभी संसाधन मौजूद हों तो भी अगर व्यक्ति नहीं चाहता तो वह कार्य नहीं हो पाता। इसलिए सबसे पहले आवश्यक है कि हमें अपने–आपको एकाग्र करके, अपनी बुद्धि को नियंत्रण में करके, अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग करना है।

एक बीज को भी धरती में समाहित होना पड़ता है। अपने आपको खोना पड़ता है तभी उसमें अंकुर फूटता है, पौधा बनता है, पेड़ बनता है और फल भी देता है। उसे धरती, पानी, सूर्य की रोशनी आदि का भी सहयोग प्राप्त होता है।

साथियो! अपने किसी भी कार्य को करने के लिए हमें स्वयं का ही नहीं बल्कि हजारों हाथों का सहयोग लेना होता है। हजारों हाथों का अगर साथ न होता तो विज्ञान ने जो उन्नति की है, वह कभी न हो पाती। इसलिए भी इन्सान–इन्सान के नजदीक आकर इस एकता के भाव में रहने लगा है। सबका साथ ही एकता के महत्व को दर्शाता है। शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक चेतना का संगम अर्थात एकत्व ही रुहानियत तक पहुंचा सकता है।

निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज ने भी अपना सारा जीवन, मानव के सहयोग से मानव को मानवता का पाठ पढ़ाने में लगाया। आपके जीवन्त अनुभवों के कारण आपको 'जीवन्त शिक्षक' के नाम से जाना जाता है। आपकी शिक्षाओं से प्रेरणा लेने के लिए 'मानव एकता दिवस' हर वर्ष अप्रैल में आयोजित किया जाता है। हम सभी आपको और आपकी विश्व एकता के सहयोग के लिए शत्–शत् नमन करते हैं।

–विमलेश आहूजा

मस्तीभरी कहानी

समझौता

एक दिन आँख और कान में झड़प हो गयी। आँख घमण्ड से बोली, "मैं तुमसे श्रेष्ठ हूँ।"

"नहीं, मैं श्रेष्ठ हूँ।" कान गुर्राया।

"मैं हूँ", आँख अपनी बात पर अड़ी-डटी रही।

"कैसे हो बता?" कान ने सवाल जड़ा।

"मेरी वजह से लोग सब कुछ देख पाते हैं।" आँख ने जवाब दिया।

"तो मेरी वजह से लोग सुनते हैं।"

"दूर से ही लोग खतरे को देखकर मेरी वजह से बच जाते हैं।" आँख ने अपना पक्ष रखा।

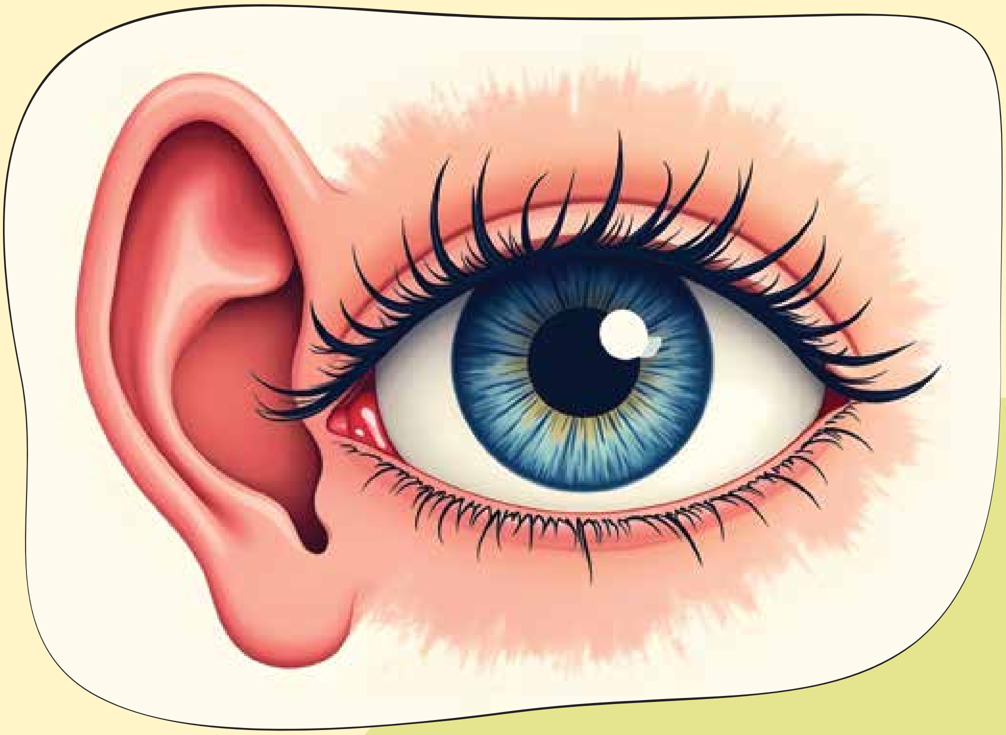

"आवाज सुनकर भी लोग खतरे का आभास पा जाते हैं और अपने को बचा लेते हैं।" कान ने तर्क दिया।

"क्या तुम नहीं जानते कि मेरा देखा सच और तुम्हारा सुना झूठ भी होता है?" आँख ने भारी भरकम सवाल खड़ा किया।"

"सुना है ऐसा।"

"फिर?"

"मगर यह कथन बिल्कुल सही नहीं है।"

"कैसे?" आँख चिढ़ गई।

"सूरज को लोग पूरब से पश्चिम की ओर जाते हुए देखते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि सूरज अपनी जगह स्थिर है।" कान आगे बोला, "इससे तुम्हारी बात झूठ सिद्ध नहीं होती।"

"तुम्हारी सुनी सच कैसे है?" आँख ने पीछा नहीं छोड़ा।

"धरती को सभी स्थिर देखते हैं। मगर यह अच्छी तरह सिद्ध हो चुका है कि धरती घूमती है- अपनी धुरी पर और सूरज के चारों ओर भी। सबने इसे सुना है, पढ़ा है। किसी ने देखा तो नहीं है। देख पाना संभव भी नहीं है।" कान ने आगे कहा, "रात-दिन और ऋतु परिवर्तन उसी की वजह से होता है।"

आँख को अब कोई तर्क नहीं सूझा। फिर भी वह बोली, "तुम श्रेष्ठ कैसे हो?"

"तुम तो सिर्फ एक ओर देख पाती हो और मैं हर तरफ की आवाज सुन लेता हूँ। यही मेरी खासियत है।" कान फिर बोला, "सोया आदमी किसी के देखने से जग नहीं सकता मगर आवाज सुनकर जाग जाता है। किसी तरह के खतरे से बच सकता है।"

कान के तर्क के आगे जब आँख निरूत्तर हो गयी तो उसका घमण्ड जाता रहा।

आँख को निरुत्तर देखकर कान शान्त भाव से बोला, "दरअसल हम दोनों का महत्व अपनी-अपनी जगह सही है। जहाँ तुम्हारी जरूरत है, मैं कुछ नहीं कर सकता और जहाँ मेरी जरूरत है, वहाँ तुम कुछ नहीं कर सकती।"

"तुम ठीक कह रहे हो," आँख को कान की समझौते वाली बात खूब पसन्द आयी।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

कहानी चली पिकनिक

गुस्से का परिणाम

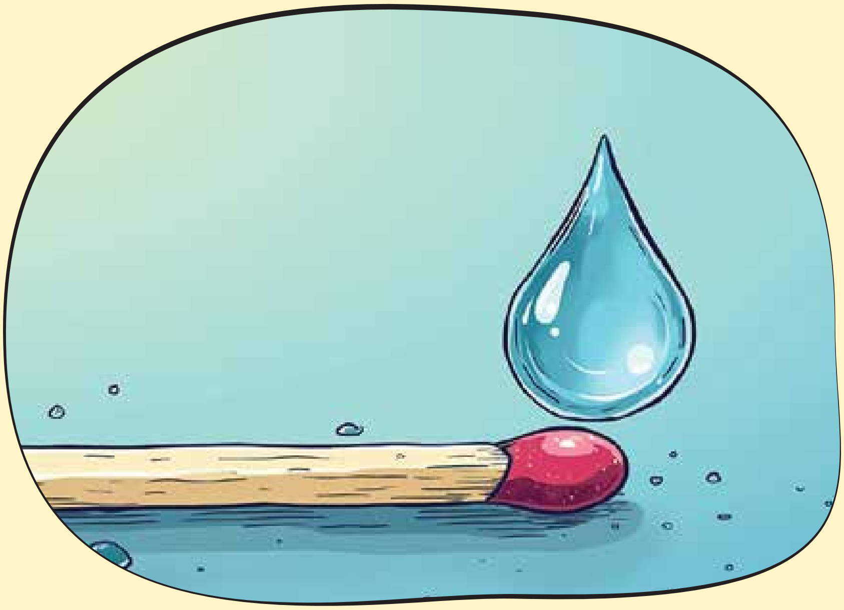

एक थी दीयासलाई की तीली और एक थी पानी की बूंद। दोनों आसपास बैठी बातें कर रही थीं, तीली ने कहा, "मैं नन्हीं होती हुई भी बड़ी शक्तिशाली हूँ, चाहूँ तो पूरी दुनिया को जलाकर भस्म कर दूँ।"

"तुम्हें अपनी शक्ति का गलत अंदाजा है" बूंद ने कहा, "मैं चाहूं तो क्षणभर में तुम्हें शक्तिहीन बना दूं।"

"बड़ी आई है तीसमारखां बनने। तुम्हें पहले ही बता चुकी हूँ कि मैं दुनिया को भस्म कर सकती हूँ। तब तुम्हारी क्या औकात? जब मैं अपनी शक्ति का प्रयोग करूंगी तो तुम पल भर में वाष्प बनकर आसमान का रास्ता पकड़ लोगी।" बूंद की बात सुनकर तीली ने तमतमाते हुए कहा।

भला बूंद कब चुप रहने वाली थी। शांत स्वर में धीरे से बोली, "सब समय की बात हैं। बड़े-बड़े शक्तिशाली भी समय की मार खाकर शक्तिहीन हो जाते हैं। उसी प्रकार समय पाकर शक्तिहीन भी शक्तिशाली बन जाते हैं।"

"जिसमें शक्ति ही नहीं हो वह भला क्या खाकर शक्ति दिखलायेगा?" तीली ने अकड़कर कहा, "जिसमें शक्ति है, समय उसकी शक्ति कैसे खत्म कर सकता है?"

“खैर! समय की बात समय आने पर पता चलेगा।” बूंद ने बात समाप्त करते हुए कहा। लेकिन तीली अपनी शक्ति के गुमान में थी। बोली, “समय का रोना वे रोते हैं जो कमजोर होते हैं। तुम कमजोर हो, समय का राग अलापो।”

“मैं बहस द्वारा अपनी शक्ति प्रमाणित नहीं करना चाहती।” बूंद ने कहा।

“क्या कहा? मैं शक्ति प्रमाणित करने के लिए बहस कर रही हूँ?” तीली गुस्से में आ गयी थी, “जिसमें शक्ति ही नहीं हो, वह बहस से क्या प्रमाणित कर पायेगा?”

“अच्छा! अब चुप रहो!! बहुत देर से गाल बजा रही हो।” बूंद का यह कहना था कि तीली अपना संतुलन खो बैठी। वह गुस्से में कांपने लगी, बूंद की ओर बढ़ती हुई तीली ने कहा, “मैं गाल बजा रही हूँ? मैं तुम्हें अभी बिना खत्म किये नहीं रहूंगी। आखिर तुमने अपने आप को समझा क्या है?”

तीली गुस्से में अपना आपा खो चुकी थी। वह बूंद से टकरा गयी। बूंद से उसके टकराने भर की देर थी कि उसका बारूद गीला हो गया। वह बेकार हो गयी थी। यह उसके गुस्से का परिणाम था। बूंद पूर्व की तरह शांत पड़ी हुई थी।

बाल कथा : अंकुश्री

चित्र में दिये प्राणियों को गिनें

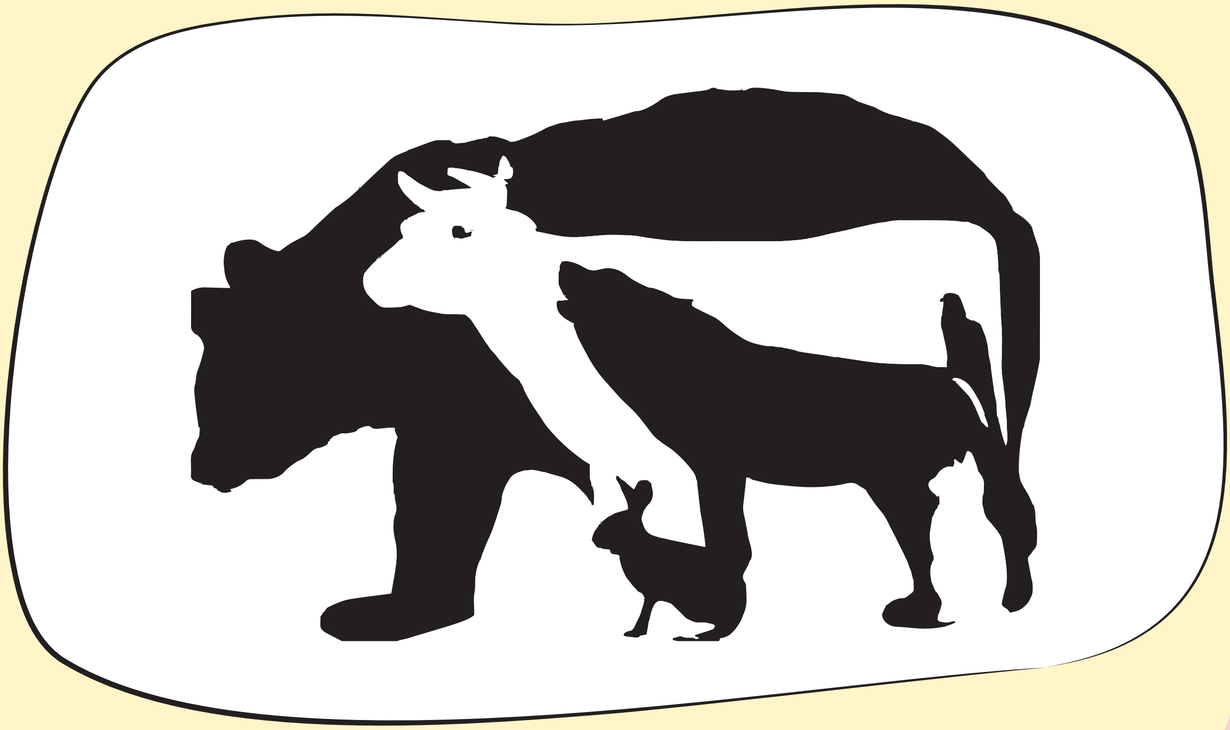

अप्रैल माह

के महत्वपूर्ण दिन

24 अप्रैल

मानव एकता दिवस

(Human Unity Day)

5 अप्रैल

राष्ट्रीय समुद्री दिवस

(National Maritime Day)

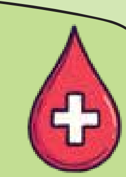

17 अप्रैल

विश्व हिमोफिलिया दिवस

(World Hemophilia Day)

7 अप्रैल

विश्व स्वास्थ्य दिवस

(World Health Day)

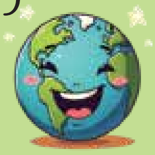

22 अप्रैल

पृथ्वी दिवस

(Earth Day)

23 अप्रैल

विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस

(World Book and Copyright Day)

10 अप्रैल

विश्व होम्योपैथी दिवस

(World Homeopathy Day)

25 अप्रैल

विश्व मलेरिया दिवस

(World Malaria Day)

11 अप्रैल

राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवस

(National Safe Motherhood Day)

29 अप्रैल

अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस

(International Dance Day)

14 अप्रैल

अंबेडकर जयंती

(Dr.B R Ambedkar Jayanti)

जीवन जीने का ढंग

एक बार मसूरी में बाबा गुरबचन सिंह जी की पुत्रियाँ और कुछ अन्य महापुरुष सैर–सपाटे के लिए निकले। जब शाम हुई तो वे बाजार से ही सिनेमाघर चले गए। उन दिनों प्रतिदिन शाम 4 से 6 बजे तक सत्संग होता था। पर वे सभी लोग शाम के सत्संग में उपस्थित होने के बजाए सिनेमा देखने के पश्चात् वहीं से किसी होटल में खाना खाकर रात को लगभग 10 बजे भवन पर पहुँचे। उस दिन जिन महापुरुषों की तरफ से रात का लंगर था। वे भवन पर ठहरी हुई समस्त संगत को लंगर छकाकर, हुज़ूर के बच्चों के वापिस लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब यह ग्रुप वापिस भवन पर लौटा तो हुज़ूर बाबा जी भवन के सामने वाली सड़क पर सैर कर रहे थे। आप जी को सामने देखकर बच्चों के साथ गए हुए सभी महापुरुष शर्म से पानी–पानी हो गए। जब एक–एक करके नमस्कार कर ली तो हुज़ूर ने पूछा, ''इतनी देर कहाँ रहे?''

शर्म से आँखें झुकाए सभी मूर्तिवत् खड़े थे। अन्तर्यामी सत्गुरु स्वयं ही बोल पड़े, ''पहले कम्पनी बाग, फिर बाजार, फिर सिनेमा और अब बाहर से खा–पीकर आ रहे हैं। तुम्हें ना ही सत्संग का समय याद रहा और ना ही यह याद रहा कि महापुरुषों ने रात का लंगर स्वीकार करने की प्रार्थना की थी। वे महापुरुष अभी तक आपकी इन्तजार में बैठे हैं, उन्होंने खुद भी खाना नहीं खाया।''

बाबा गुरबचन सिंह जी की यह शिक्षात्मक डाँट सुनकर मनमोहन जी और जगजीत जी ने चरणों पर सिर रख दिया। जगजीत जी तो वैसे ही बहुत हँसमुख स्वभाव की हैं। उस दिन भी उन्होंने अपनी भूल को स्वीकार करते हुए कहा, ''बाबा जी बच्चे हैं, गल्तियाँ तो हो ही जाती हैं। आप कृपया बख्श दें और आगे के लिए सुमति प्रदान करें।''

हुज़ूर ने समझाते हुए फरमाया, ''यदि जीवन में सुख लेना चाहते हो तो संगत और महापुरुषों की भावना की कद्र करना सीखो। याद रखना, सन्त–महापुरुषों की श्रद्धा और प्यार से भरपूर रूखी–सूखी रोटी भी बड़े से बड़े होटल के मँहगे पकवानों से अच्छी और सुखदाई होती है। आप सब तो गुरसिख हैं, आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि दुनिया के सभी रंग–तमाशों से अधिक पक्का रंग और आनन्द साध संगत में मिलता है। सत्संग को छोड़कर किसी और तरफ ध्यान देना महापुरुषों को शोभा नहीं देता।''

हुज़ूर के फरमाने के पश्चात सभी महापुरुषों ने चरणों पर शीश रखकर अरदास की, ''बाबा जी, हमें बख्श दीजिये। ऐसी कृपा करें कि ऐसी भूल दोबारा ना हो।'' आपजी ने सभी को क्षमा के ढंग से थपकी देते हुए फरमाया, ''जाओ, वह महापुरुष भोजन के लिए आपका इन्तजार कर रहे हैं, उसे परवान करो, ताकि उन्हें भी खुशी मिल जाए। अगर महापुरुष खुश तो सुख ही सुख।'' इतना फरमाते हुए आपजी आगे निकल पड़े। इस ग्रुप के सभी महापुरुष एक ओर अपनी भूल का एहसास करके शर्मिन्दा हो रहे थे और दूसरी तरफ आपकी क्षमादान व शिक्षा पर गर्व भी कर रहे थे कि हुज़ूर सच्चे पातशाह जी ने हमें गुरुमत की सही पगडंडी पर वापिस ला खड़ा किया है।

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज बच्चे–बच्चे की भावना की कद्र करते थे। वे बच्चों से बहुत प्यार करते थे। अपने भक्तों की श्रद्धा, प्रेम व सेवा भाव को वह सदा ही सम्मान देते थे और सभी को पूरा आशीर्वाद प्रदान करते थे।

एक बार समागम के दिनों की बात है। दिल्ली के वार्षिक सन्त समागम के अवसर पर कई–कई दिन आप केवल एक या दो घंटे ही सो पाते थे। सोमवार को समागम सम्पन्न हुआ और मंगलवार को भी समागम स्थल पर कई घंटे लगातार नमस्कार होती रही और संगत भी चलती रही। रात लगभग एक बजे आराम करने के लिए हुज़ूर अपने निवास स्थान पर गये। अपने शयनकक्ष के बाहर वाले बरामदे में ही आप पलंग पर विश्राम कर रहे थे। रात के लगभग डेढ़–पौने दो बजे एक महात्मा इकबालजीत राय जी, जिनकी सुबह की उड़ान (फ्लाईट) थी और जो अमरीका जा रहे थे, उन्होंने सेवादार महापुरुष को निवेदन किया और अंदर बरामदे में पहुँच गये। हुज़ूर की पीठ दरवाजे की ओर थी। वह महापुरुष समझे कि शायद हुज़ूर की आँख लगी हुई है। उन्होंने दरवाजे के पास ही पड़ी हुई मेज़ पर अपनी माया रखकर दूर से ही हाथ जोड़कर नमस्कार की और वापिस पलटने लगे तो एकदम भक्तवत्सल सत्गुरु ने अपनी मधुर आवाज में पुकारा, ''हाँ जी इकबाल जी! बिना मिले ही जा रहे हो। सुबह की फ्लाईट है ना।'' यह कहते हुए आप इस तरह उठकर बैठ गये जैसे कि पहले से ही जाग रहे हों। आपजी ने आधी रात को भी उस महापुरुष को भरपूर आशीर्वाद देकर विदा किया।

('जीवन्त शिक्षक' पुस्तक से)

बहुत साल पहले

जीवन की उपयोगिता

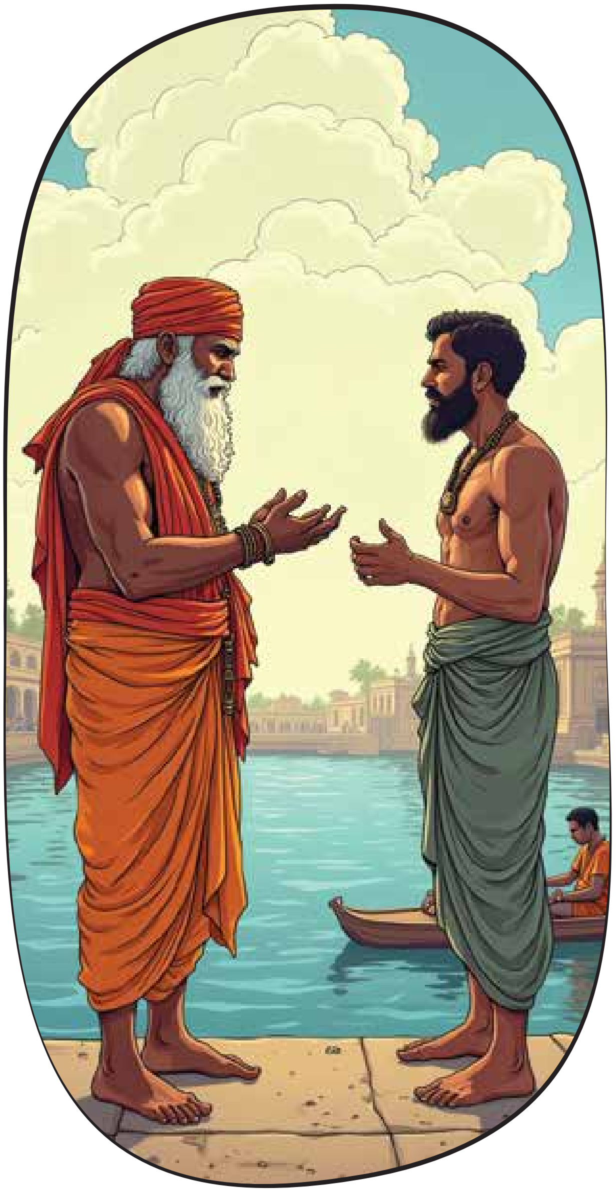

दक्षिण भारत के महान दार्शनिक एवं कवि तिरुवल्लुवर फुर्सत के क्षणों में प्रकृति की हसीन वादियों का पैदल भ्रमण किया करते। कुदरत के बेहतरीन नजारे देखकर उनके मस्तिष्क में नई–नई कल्पनाएँ उपजा करतीं और वे साहित्य के प्रति कुछ नया सन्देश अपने मन में सोच लिया करते। उन्होंने प्रकृति के रंगों में भीगी अपनी रचनाओं में प्रकृति के श्रृंगार की अद्भुत तारीफ की है।

तिरुवल्लुवर हमेशा लोगों को सही नसीहत प्रदान किया करते। ऐसे ही एक बार वे सरिता तट पर बैठे थे। अचानक उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति सरिता में कूदकर अपने प्राण देना चाहता है। तिरुवल्लुवर ने दौड़कर उसे पकड़ लिया तो उसने शिकायत की– ‘जिस जीवन की कोई सार्थकता न हो, उसकी रक्षा करने से क्या लाभ?’

तिरुवल्लुवर बोले– ‘देखो, इस दुनिया में धूल का एक कण तक निरर्थक नहीं है। अभी तुम्हें अपना जीवन अपने लिए अनुपयोगी लग रहा है, पर निजि उपयोगिता ही तो एकमात्र उपयोगिता नहीं है। अपने लिए नहीं तो दूसरों के लिए तुम

उपयोगी बन सकते हो और जब तुम अपना जीवन दूसरों के लिए समर्पित कर दोगे, तो अपने लिए भी तुम्हारा जीवन उपयोगी सिद्ध लगेगा।

यह सुनते ही वह व्यक्ति उनके कदमों में गिरकर क्षमायाचना करने लगा और बोला– मेरे बड़े भ्राता। मैं जीवन का कोई सार्थक मूल्य आज तक न समझा था, लेकिन आज आपने मुझे जीवन का मूल्य भी बताया और जीने का अन्दाज भी बतलाया। हाँ, मैं आज से वादा करता हूँ, मैं अपने लिये नहीं बल्कि दीन–दुखी मानव के प्रति सच्ची श्रद्धा से सेवा करूंगा और उन्हें भी जीने की कला के गुणों से परिचित कराऊँगा।

यह सुनकर कवि तिरुवल्लुवर ने उस व्यक्ति को आशीर्वाद देते हुए कहा– तुम्हारी हर सेवा खूब फले फूले।

प्रेरक कहानी : अर्चना सौगानी

पैटर्न पूरा करें

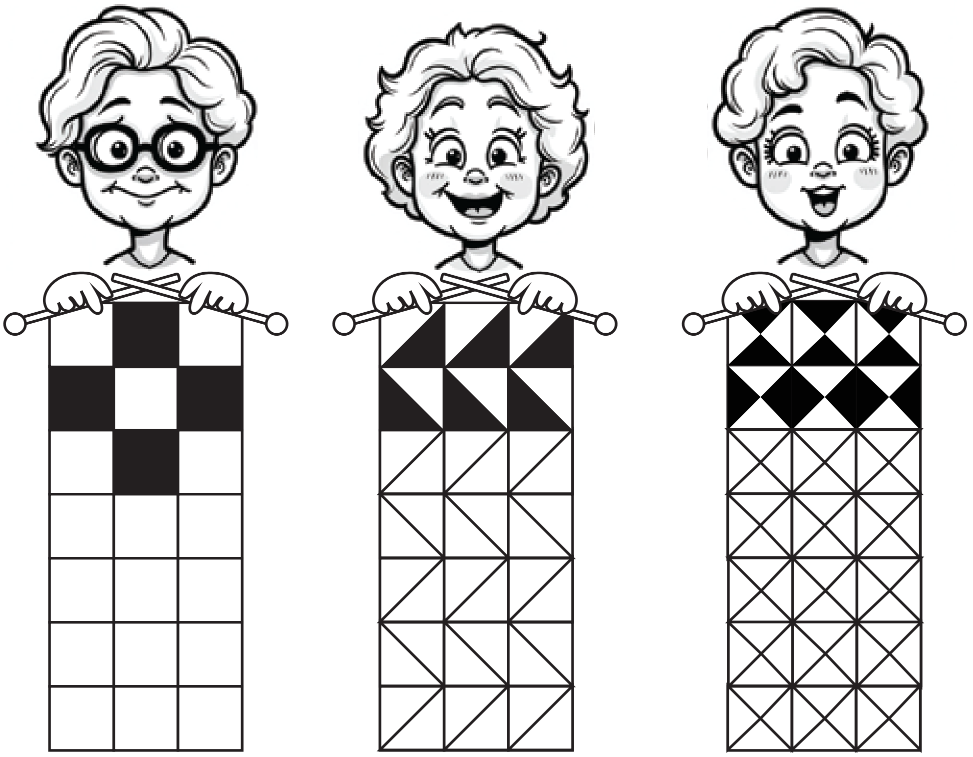

ब्रह्मांड के अद्‌भुत रहस्य

पल्सार और ब्लैक होल्स

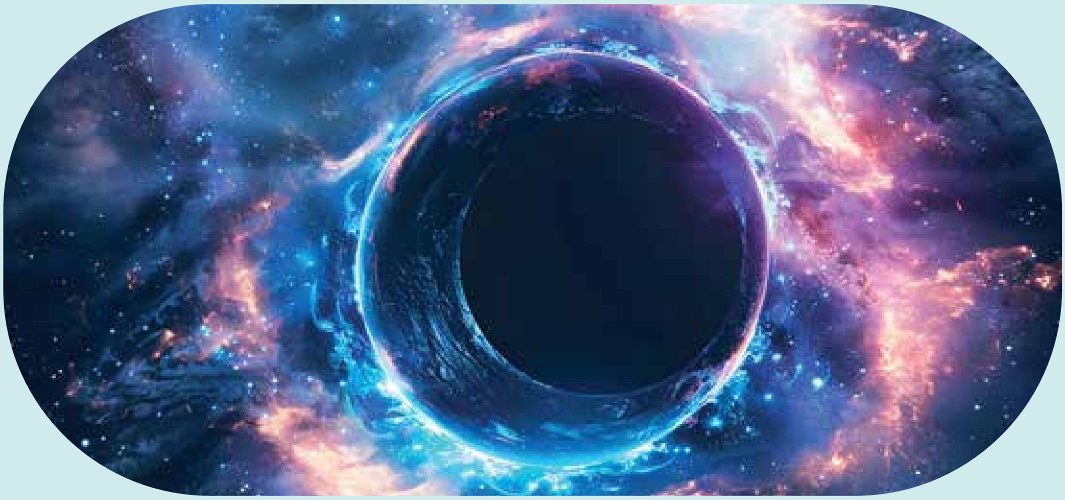

रात के समय, जब हम आकाश में बिना बादल के सितारों को देखते हैं, तो हमारे मन में बहुत सारे सवाल आते हैं! और भी कौन से अद्‌भुत प्राणी होंगे हमारे साथ इस विशाल ब्रह्मांड में? हमें दिख रहे तारे, आकाशगंगाएँ, ग्रह, उपग्रह, और बहुत कुछ छिपा हुआ है इस ब्रह्मांड में, तो चलिए देखते हैं, हमारे ब्रह्मांड के रहस्यों में छुपे हुए हमारे साथी कौन हैं!

पल्सार तारे (*Pulsar*)

पल्सार, न्यूट्रान तारे होते हैं जो बहुत तेजी से अपने अक्ष पर घूमते हैं। जब कोई बड़ा तारा अपना इंधन समाप्त कर देता है, तो सुपरनोवा विस्फोट के बाद जो बचते हैं, वे न्यूट्रान तारे बन जाते हैं जिन्हें पल्सार कहा जाता है। इस विस्फोट से पल्सार को तेज गति मिलती है और यह घूमते रहते हैं। कुछ पल्सार तो प्रति सेकंड 4 बार घूमते हैं, जबकि कुछ शेकड़ों बार घूमते हैं!

पल्सार से आने वाले रेडियो संदेश क्या परग्रही जीवन के संकेत हैं?

एक समय था जब वैज्ञानिकों ने सोचा था कि पल्सार से आने वाले रेडियो तरंगें परग्रही जीवन से संदेश हो सकते हैं। 1967 में, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक ने रळड1 नामक पहले पल्सार का पता लगाया, और शुरुआत में उन्हें लगा कि ये रेडियो तरंगें किसी संकट में फंसे हुए परग्रही जीवन द्वारा भेजे गए संदेश हैं!

पल्सार एक प्रकार के ब्रह्मांडीय रेडियो ट्रांसमीटर होते हैं। वे निश्चित समय अंतराल पर रेडियो, एक्स-रे, और गामा किरणों का उत्सर्जन करते हैं, जिन्हें पृथ्वी पर स्थित दूरबीन से पल्स (स्पंदन) के रूप में महसूस किया जाता है। इनका वेग और संकेत अत्यंत सटीक होते हैं, इसलिए वैज्ञानिक इनका उपयोग ग्रहों के अध्ययन और अंतरिक्ष अनुसंधान में करते हैं। भविष्य में, अंतरिक्ष यात्राओं में पल्सार के संकेतों का उपयोग दिशा निर्देश के लिए किया जा सकता है!

पल्सार का द्रव्यमान

यह विशेष है कि यदि पल्सार का एक चमचाभर पदार्थ पृथ्वी पर लाया जाए, तो उसका वजन कई अरब टन होगा! कुछ पल्सार 'मैग्नेटार' कहलाते हैं, क्योंकि उनके पास अत्यधिक शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र होते हैं।

ब्लैक होल (Black Hole)

ब्लैक होल एक विशाल तारे के अंत में, यानी उसके मरने के बाद बनता है। जब तारे का इंधन समाप्त हो जाता है, तो वह अपनी ही गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण सिकुड़ जाता है और एक अत्यंत छोटे, लेकिन अत्यधिक भारी बिंदु में बदल जाता है, जिसे सिंग्युलैरिटी कहते हैं। ब्लैक होल के पास इतना शक्तिशाली गुरुत्वाकर्षण होता है कि वह आसपास की सभी वस्तुओं को खींच लेता है, यहाँ तक कि प्रकाश भी।

क्या ब्लैक होल विशाल होते हैं?

वैज्ञानिकों के अनुसार, ब्लैक होल छोटे और बड़े दोनों प्रकार के होते हैं। कुछ अणु के आकार के होते हैं, लेकिन उनका वजन एक पूरे पहाड़ जितना भारी होता है! बड़े तारे मरने के बाद जो ब्लैक होल बनते हैं, उन्हें 'स्टेलर ब्लैक होल' कहा जाता है, और उनका वजन सूर्य के 15-20 गुना अधिक हो सकता है। हमारी आकाशगंगा में ऐसी कई ब्लैक होल्स मौजूद हैं। सबसे बड़े ब्लैक होल्स "सुपरमैसिव ब्लैक होल" होते हैं, जिनका वजन सूरज से दस लाख गुना अधिक हो सकता है! हमारी आकाशगंगा के केंद्र में स्थित धनु।(Sagittarius) नामक ब्लैक होल का वजन 40 लाख सूरजों के बराबर है और उसमें लाखों पृथ्वियाँ समा सकती हैं!

ब्लैक होल के अंदर क्या है?

ब्लैक होल के अंदर क्या है, यह आज भी एक रहस्य है, क्योंकि एक बार उसके अंदर प्रवेश करने के बाद बाहर निकलना असंभव हो जाता है। उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति इतनी प्रबल होती है कि प्रकाश भी उसमें से बाहर नहीं निकल सकता। ब्लैक होल के इवेंट होराइजन (Event Horizon) पर पहुँचने के बाद समय धीमा हो जाता है, और यदि आप उसके अंदर जाते हैं, तो अत्यधिक गर्मी और विकिरण के कारण सब कुछ नष्ट हो जाता है। इस कारण, ब्लैक होल में प्रवेश करने से जीवित बचना असंभव होता है।

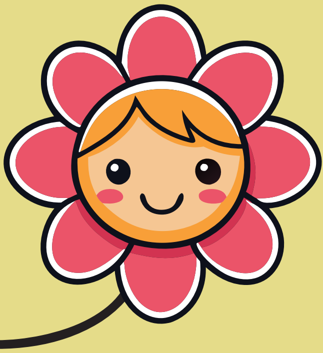

खुश रहना बच्चों से सीखा

खुश रहना बच्चों से सीखा,
होते जो मन के अच्छे।
बचपन की शाला में पढ़कर,
बन जाते मन के सच्चे।।

अक्सर ही बातें करता मैं,
हँसते या फिर संकुचाते।
घुल-मिल जाते तनिक देर में,
तब फूलों-सा मुस्काते।।

कोई कहता बनूँ डॉक्टर,
अपनी धुन के सब पक्के।
बचपन की शाला में पढ़कर,
बन जाते मन के सच्चे।।

कोई कहता अटक-मटककर,
क्रिकेटर बन जाऊँगा।
जड़कर चौके-छक्के मैं,
भारत का मान बढ़ाऊँगा।।

घर-आँगन में चहकें-महकें,
ये फूलों जैसे गुच्छे।
बचपन की शाला में पढ़कर,
बन जाते मन के सच्चे।।

कोई कहे बनूँगी टीचर,
कुछ चाहे बनूँ कलेक्टर।
इंजीनियर बनें, कुछ चाहें,
कोई वैज्ञानिक हँसकर।।

जाने क्या-क्या बनना चाहें,
प्यारे मोहक सब बच्चे।
बचपन की शाला में पढ़कर,
बन जाते मन के सच्चे।।

समय मूल्य का जिसने जाना,
वही सफल बन जाते हैं।
बन जिज्ञासु पढ़ें जो बच्चे,
अपना ज्ञान बढ़ाते हैं।।

घर का भोजन रुचि से खाना,
कभी न चाऊमिन लच्छे।
बचपन की शाला में पढ़कर,
बन जाते मन के सच्चे।।

बाल गीत : डॉ. राकेश चक्र

अंधेरे में चमकती जानवरों की आँखें

क्या आपकी आँखें अंधेरे में चमकती हैं? नहीं न। लेकिन प्रकृति की लीला बड़ी विचित्र है। उसने धरती पर ऐसे प्राणियों की भी रचना की है जिनकी आँखें रात के अंधेरे में भी चमकती हैं।

आप जानना चाहेंगे कि कुछ जानवरों की आँखें अंधेरे से क्यों चमकती हैं? दरअसल उनकी आँखों में एक विशेष प्रकार के मणिभीय पदार्थ की पतली सी परत होती है, जो आँख पर पड़ने वाले प्रकाश को परावर्तित कर देता है। यह परावर्तित प्रकाश ही चमक का कारण होता है। होता यह है कि रात्रि में कम से कम प्रकाश भी जब इस परत पर पड़ता है, तो वह परावर्तित हो जाता है और हमें आँखें चमकती हुई दिखाई देती हैं। ये जानवर अंधेरे में भी अच्छी तरह देख सकते हैं।

जिन जानवरों की आँखें रात में चमकती हैं, उन सबकी चमक का रंग एक जैसा नहीं होता। यह चमक लाल, सफेद या हल्की पीली दिखाई देती है। जानते हैं ऐसा क्यों? जिनकी आँखों में खून की नसें ज्यादा होती हैं उनकी आंखों की चमक लाल होती है। इसके विपरीत जिन जानवरों की आँखों में इन नसों की कमी होती है उनकी आँखों की चमक सफेद या हल्की पीली होती हैं।

बिल्ली, शेर, चीते आदि का शरीर तो रात के अंधेरे में दिखाई नहीं देता। हाँ, सिर्फ आँखें चमकीली अवश्य दिखाई देती हैं जिनसे हम डर जाते हैं।

प्रस्तुति : किरण बाला

सोहन चिड़िया

पीले रंग के सिर और गर्दन पर काली टोपी जैसी बनावट, लम्बी टांग और शारीरिक संरचना शुतुरमुर्ग से मिलती–जुलती; यह है सोहन चिड़िया जो देखने में काफी खूबसूरत और आकर्षक होती है। कुछ वर्ष पूर्व तक यह भारत और पाकिस्तान में बहुतायत से पायी जाती थी जो औद्योगीकरण तथा जंगल की कटान जैसे कारणों से आज विलुप्त होने के कगार पर है। अब इसकी संख्या बहुत कम रह गई है।

सोहन चिड़िया भारत में राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात में पाई जाती है। इसके भूरे रंग वाले शरीर पर काले धब्बे पाए जाते हैं। अन्य पक्षियों की तुलना में इसका वजन अधिक तथा 8 से 14 किलोग्राम के मध्य होता है। इसलिए इसकी गणना भारी शरीर वाले 'फ्लाइंग बर्ड्स' में की जाती है। यह सर्वाहारी यानी शाकाहारी और मांसाहारी दोनों हैं। यह घास के बीज, फल, मूंगफली, ज्वार, बाजरा और दाल के अलावा चूहा, गिलहरी, कीड़ा–मकोड़ा और छिपकली बड़े चाव से खाती है।

अधिक पानी उपलब्ध न होने पर यह जल सोख लेती है तथा अपना सिर एक निश्चित ऊँचाई तक उठाती है। नर सोहन चिड़िया एक विशेष प्रकार की आवाज़ निकालती है। इसलिए उत्तर भारत में इसे हुकना के नाम से भी जाना जाता है।

प्रस्तुति : विद्या प्रकाश

कहानी ने कहा

मित्र की पहचान

रिम्पी और बलदेव एक ही कस्बे में रहते थे। दोनों अलग-अलग स्कूलों में आठवीं कक्षा में पढ़ते थे। उनके घर भी ज्यादा दूर नहीं थे। शाम को वे कस्बे के बाहर एक खुले मैदान में आ जाते और जमकर कुश्ती खेलते। यही दोनों का एकमात्र पसंदीदा खेल था।

रिम्पी के पिताजी एक अधिकारी थे जबकि बलदेव के पिताजी एक साधारण किसान थे। बेशक बलदेव की स्कूल में आधी फीस माफ थी लेकिन फिर भी उसे पढ़ाना बलदेव के माता-पिता के लिए बहुत कठिन था। बलदेव हर वर्ष ही अगली कक्षा में जाकर पुरानी पुस्तकें खरीदकर पढ़ता था।

इस वर्ष जब बलदेव आठवीं कक्षा में दाखिल हुआ तो गणित, अंग्रेजी, कम्प्यूटर और विज्ञान की पुस्तकें पाठ्यक्रम में नई लगी थीं।

एक दिन शाम को जब बलदेव के पिताजी घर लौटे तो वह उनके लिए पानी का गिलास लाया। उनके पानी पीकर बैठने के बाद बलदेव बोला- पिताजी, मुझे नई पुस्तकें खरीदने के लिए दो सौ रुपयों की जरूरत है।

-दो सौ रुपये?- बलदेव के पिताजी चौंक पड़े।

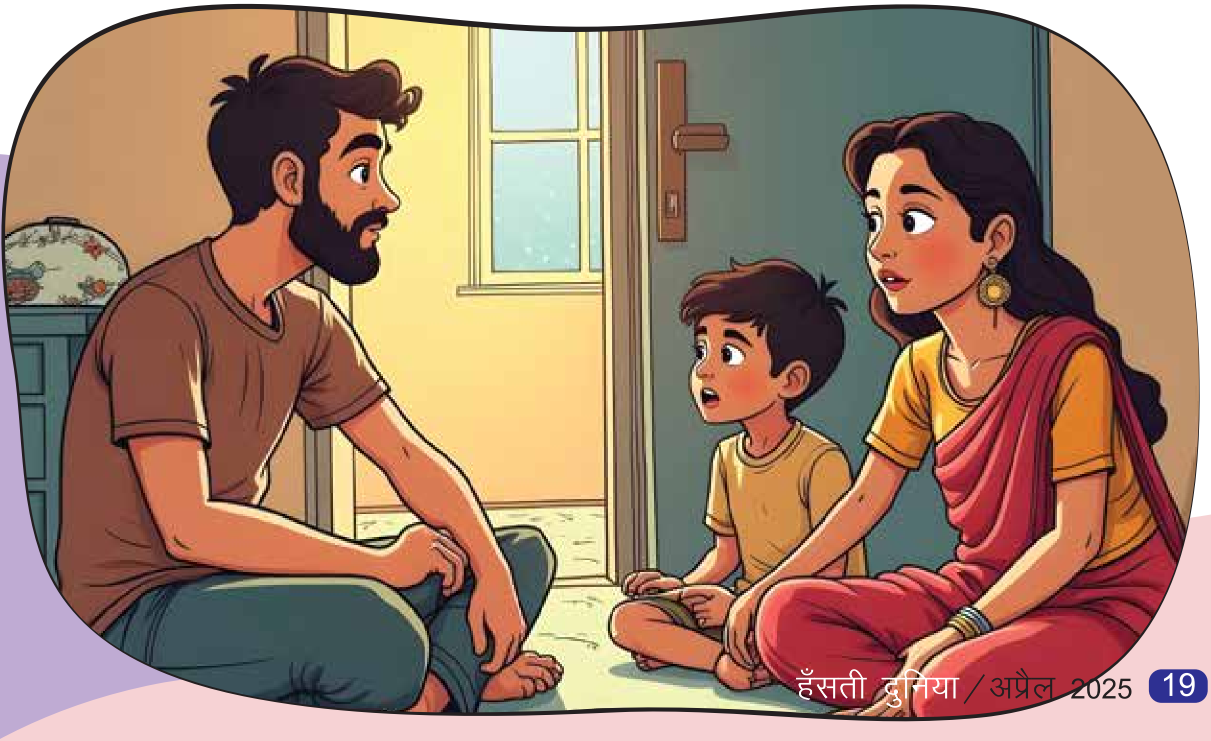

-हाँ पिताजी, मुझे चार पुस्तकों की जरूरत है। ये पुस्तकें हमें नई लगी हैं।

-कहीं से पुरानी नहीं मिल सकती। अभी कुछ दिन पहले तो मैंने तुम्हें वर्दी सिलवाकर दी है। स्कूल की फीस भी दी है और ऊपर से आज दो सौ रुपये एकदम कहाँ से लाकर दूं? -बलदेव के पिताजी चिन्ता भरे स्वर में बोले।

इतने में बलदेव की माताजी बोली- मेरे कानों की झुमकियां बेटे की पढ़ाई के मौके पर काम नहीं आ सकतीं तो फिर कब आएंगी? आप इन्हें बेचकर बलदेव की पुस्तकों का प्रबन्ध करें।

-ठीक है, कल शाम को जल्दी आ जाऊंगा और फिर दोनों मिलकर श्यामू सुनार की दुकान पर चलेंगे।- बलदेव के पिताजी बोले और फिर नहाने की तैयारी करने लगे।

अगले दिन रिम्पी के स्कूल में आसपास के दस स्कूलों के विद्यार्थियों की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन था। सभी विद्यार्थी खूब मेहनत कर रहे थे। हर कोई चाहता था कि उसके स्कूल का नाम ऊँचा हो। प्रत्येक खेल में जीतने वाले खिलाड़ी को दो सौ रुपये का नकद ईनाम दिया जाना था। तीस से पैंतीस किलोग्राम वजन वाले खिलाड़ियों में बलदेव और रिम्पी भी शामिल थे।

बलदेव अपने स्कूल की तरफ से कुश्ती लड़ने की तैयारी कर रहा था। दूसरी तरफ उसने रिम्पी को अपने स्कूल की तरफ से अपने ही साथ कुश्ती लड़ने के लिए कपड़े उतारते देखा तो बलदेव ने सोचा कि वह अपने कपड़े पहन ले क्योंकि उसे हराना सरल नहीं था। लेकिन अपने स्कूल की इज्जत का सवाल था। इसलिए वह मैदान में आया और वह भी डंड पेलने लगा। बलदेव मन ही मन डर रहा था कि रिम्पी उसे पहली बार में ही चित्त कर देगा और हो-हल्ला मच जाएगा।

ज्यों ही रेफरी ने सिटी बजाई। दोनों की कुश्ती शुरू हो गई। दोनों आपस में गुत्थम-गुत्था हो गये। पूरा जोर लगाकर रिम्पी ने बलदेव को कंधे पर उठा लिया।

-कर दे चित्त; लगा दे इसका कंधा।- ऐसी कई किस्म की आवाजें लगातार आने लगीं।

लेकिन यह क्या? रिम्पी का अचानक संतुलन बिगड़ गया और खुद गिरता-गिरता बचा। तब तक बलदेव ने मौका संभाल लिया और रिम्पी को नीचे गिरा दिया। अब कभी रिम्पी नीचे होता तो कभी बलदेव।

अचानक ही बलदेव ने रिम्पी को चित्त कर दिया।

-शाबाश बलदेव, शाबाश!- की आवाजें ऊँची होने लगीं। बलदेव के एक दो और दोस्तों ने उसे उठाकर अपने कंधे पर बैठा लिया और चक्कर काटने लगे। बलदेव ने दो सौ रुपये का नकद ईनाम जीत लिया था।

बलदेव को विश्वास नहीं आ रहा था कि उसने रिम्पी को चित्त कर दिया है। उस के मन में उधेड़बुन थी। शाम को वह इसी उधेड़बुन में रिम्पी के घर गया। वह अपने घर में ही था।

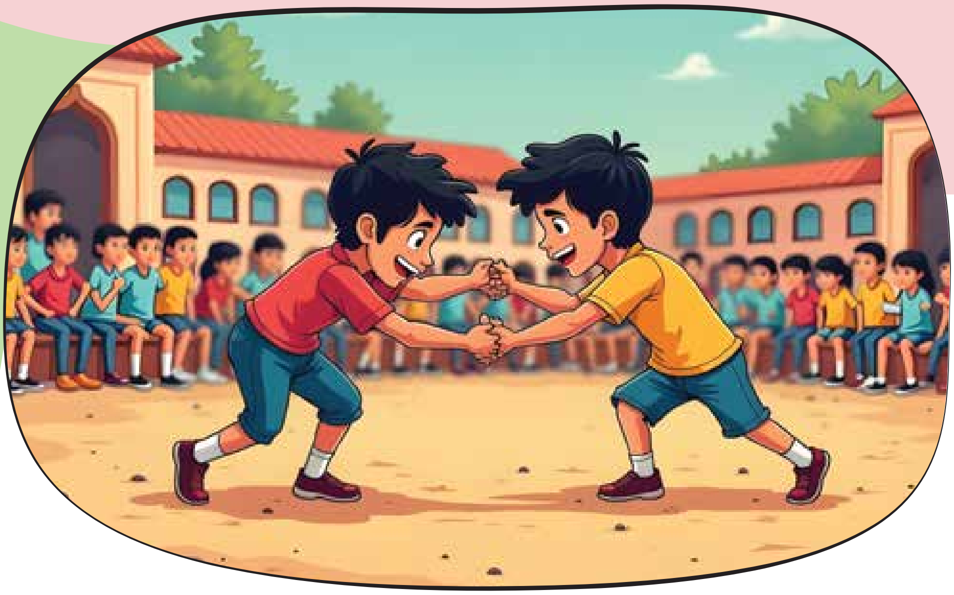

आओ बलदेव, बधाई हो! आज तो तूने कमाल कर दिया यार। इतनी शक्ति तुम्हारे अंदर कैसे आ गई? मैंने तुम्हें चित्त करने की पूरी कोशिश की लेकिन यार तुम तो पता नहीं कहाँ से कमाल के दांव-पेंच सीखकर आए थे? कमाल कर दी तूने तो?

रहने दो रिम्पी, इन बातों को- बलदेव बोला- अच्छा ये बताओ कि तुम्हारा सबसे प्यारा मित्र कौन है?

तुम।- रिम्पी बोला।

फिर मेरी कसम खाकर बताओ कि क्या तुम आज मुझसे जान-बूझकर नहीं हारे?- बलदेव ने पूछा।

यह सुनते ही रिम्पी का रंग एकदम बदल गया। मानो उसकी चोरी पकड़ी गई हो। रिम्पी को कुछ न सूझा।

चोर पकड़ा गया न?- बलदेव ने उसके हाथ पर हाथ मार कर कहा।

अब रिम्पी से रहा न गया। वह बोला- बलदेव, सच्ची बात तो यह है कि मैं कल तुम्हारे घर गया था। जब मैं अंदर दाखिल हुआ था तो तुम्हारी माताजी तुम्हारी पुस्तकें खरीदने के लिए अपनी झुमकियां बेचने की बात कर रहे थे। मैंने उनकी बातें सुन ली थीं और दबे पांव वहीं से वापिस लौट आया था। आज कुश्ती के दौरान मैंने सोचा कि इस समय दो सौ रुपये की मुझे नहीं, तुम्हें बहुत सख्त जरूरत है। इसलिए मैंने तुम से हारना ही ठीक समझा।

यह सुनकर बलदेव की आंखें छलक उठीं। वह रिम्पी का हाथ पकड़कर बोला- रिम्पी, तुम हारकर भी जीत गये हो।

रिम्पी ने बलदेव को गले लगा लिया।

कहानी : दर्शन सिंह आशट

एकता में शक्ति

सुंदूर एक घना जंगल था, जहाँ कई तरह के जानवर रहते थे। वहाँ खरगोश, हिरण, बंदर, हाथी, शेर, लोमड़ी और भालू सभी शांति से रहते थे। जंगल हरा-भरा था, भोजन की कोई कमी नहीं थी, और सभी जानवर खुश थे। लेकिन उनकी खुशी ज्यादा दिनों तक नहीं टिक सकी।

एक दिन, जंगल के पास रहने वाले कुछ लकड़हारे वहाँ पेड़ काटने आए। वे धीरे-धीरे पूरे जंगल को काटने लगे। पहले तो जानवरों ने इस पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब पानी के स्रोत सूखने लगे और घोंसले उजड़ने लगे, तब उन्हें एहसास हुआ कि उनका घर खतरे में है।

जानवरों की एक बैठक हुई, लेकिन वहाँ आपस में बहस होने लगी। हाथी ने कहा- मैं बहुत बड़ा और ताकतवर हूँ, मैं अकेले ही इन लकड़हारों को रोक दूंगा! शेर ने घमंड से कहा- मैं जंगल का राजा हूँ, मेरे दहाड़ने से वे भाग जाएँगे! लोमड़ी बोली- हम चुपचाप रहेंगे, वे खुद ही चले जाएँगे। हर कोई अपनी बात मनवाने में लगा था, लेकिन कोई ठोस हल नहीं निकल रहा था। बंदर चतुर और समझदार था। उसने कहा- अगर हम अकेले-अकेले लड़ेंगे, तो हार जाएँगे। हमें मिलकर लड़ना होगा। लेकिन बाकी जानवरों ने उसकी बात अनसुनी कर दी। अगले ही दिन लकड़हारे फिर आए। हाथी अकेले उन्हें रोकने गया, लेकिन उन्होंने जलते हुए मशालों से उसे डरा दिया।

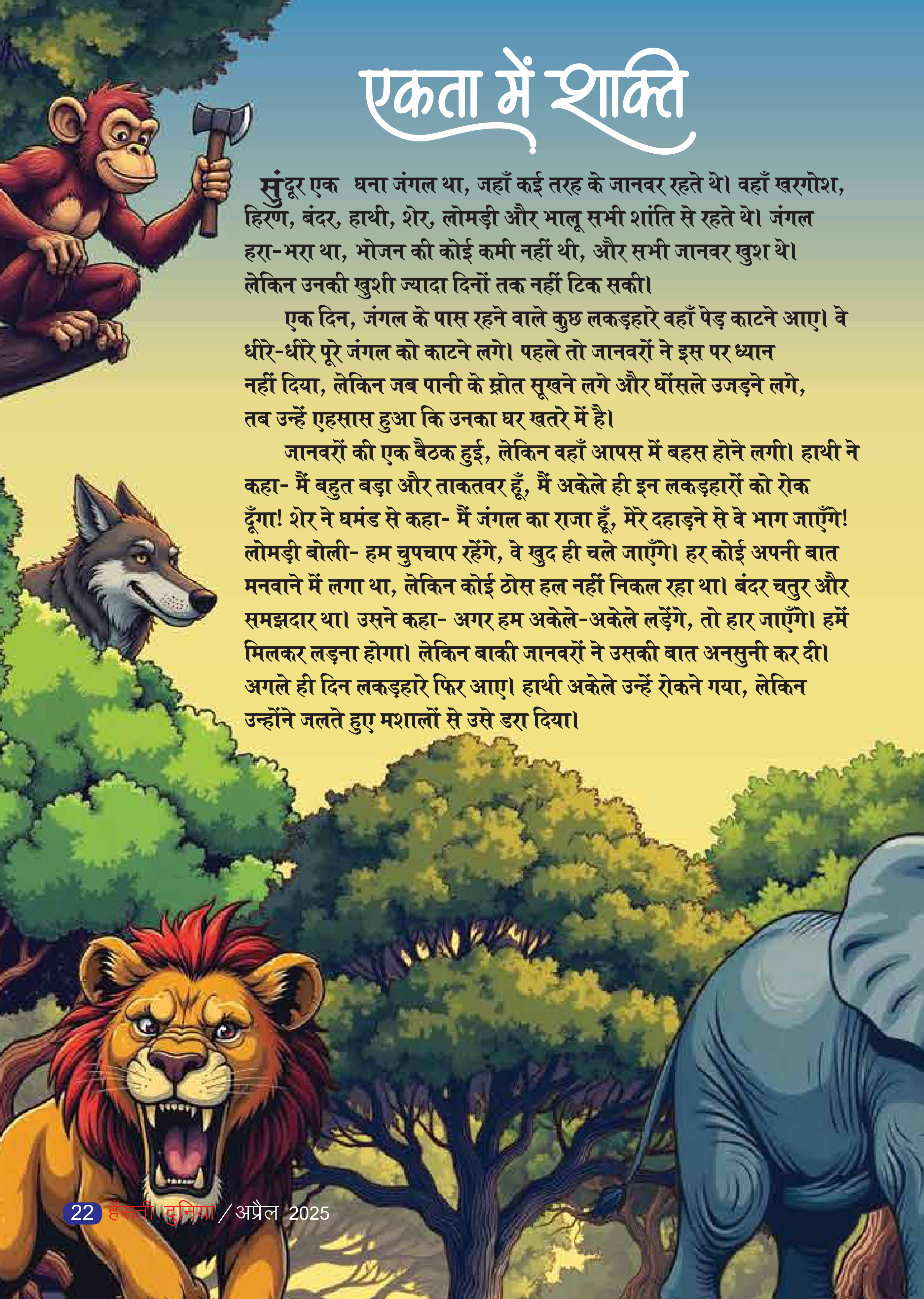

शेर उन पर दहाड़ा, लेकिन वे बंदूकों के साथ तैयार थे। धीरे-धीरे लकड़हारे जंगल के अंदर तक पहुँच गए, और अब सब जानवर डरने लगे। अब सभी जानवरों को एहसास हुआ कि अकेले वे कुछ नहीं कर सकते। उन्होंने मिलकर योजना बनाई।

चींटियाँ लकड़हारों के कपड़ों में घुस जाएँगी और उन्हें काटेंगी। बंदर और तोते उनकी कुल्हाड़ियाँ और औजार लेकर पेड़ों पर रख देंगे। हाथी अपनी सूंड से पानी फेंककर उनकी लकड़ियों को गीला कर देंगे। भालू और भेड़िए झाड़ियों में छिपकर डरावनी आवाजें निकालेंगे। जैसे ही लकड़हारे जंगल में घुसे, योजना के अनुसार सभी जानवरों ने एक साथ हमला कर दिया। चींटियों के काटने से वे परेशान हो गए, तोते और बंदर उनके औजार छीनने लगे। हाथियों ने पानी डालकर उनकी लकड़ियों को बेकार कर दिया, और भेड़िए व भालू की डरावनी आवाजों से वे घबरा गए। जब शेर ने जोर से दहाड़ लगाई, तो वे अपनी जान बचाकर भाग गए। उस दिन के बाद कोई भी लकड़हारा जंगल की ओर जाने की हिम्मत नहीं कर सका।

सीख : जानवरों को समझ आ गया कि ताकत अकेले काम नहीं आती, बल्कि एकता में ही असली शक्ति है। अगर वे पहले ही एक हो जाते, तो इतना नुकसान नहीं होता। अगर हम संगठित रहें, तो सबसे बड़ी मुश्किल को भी हरा सकते हैं!

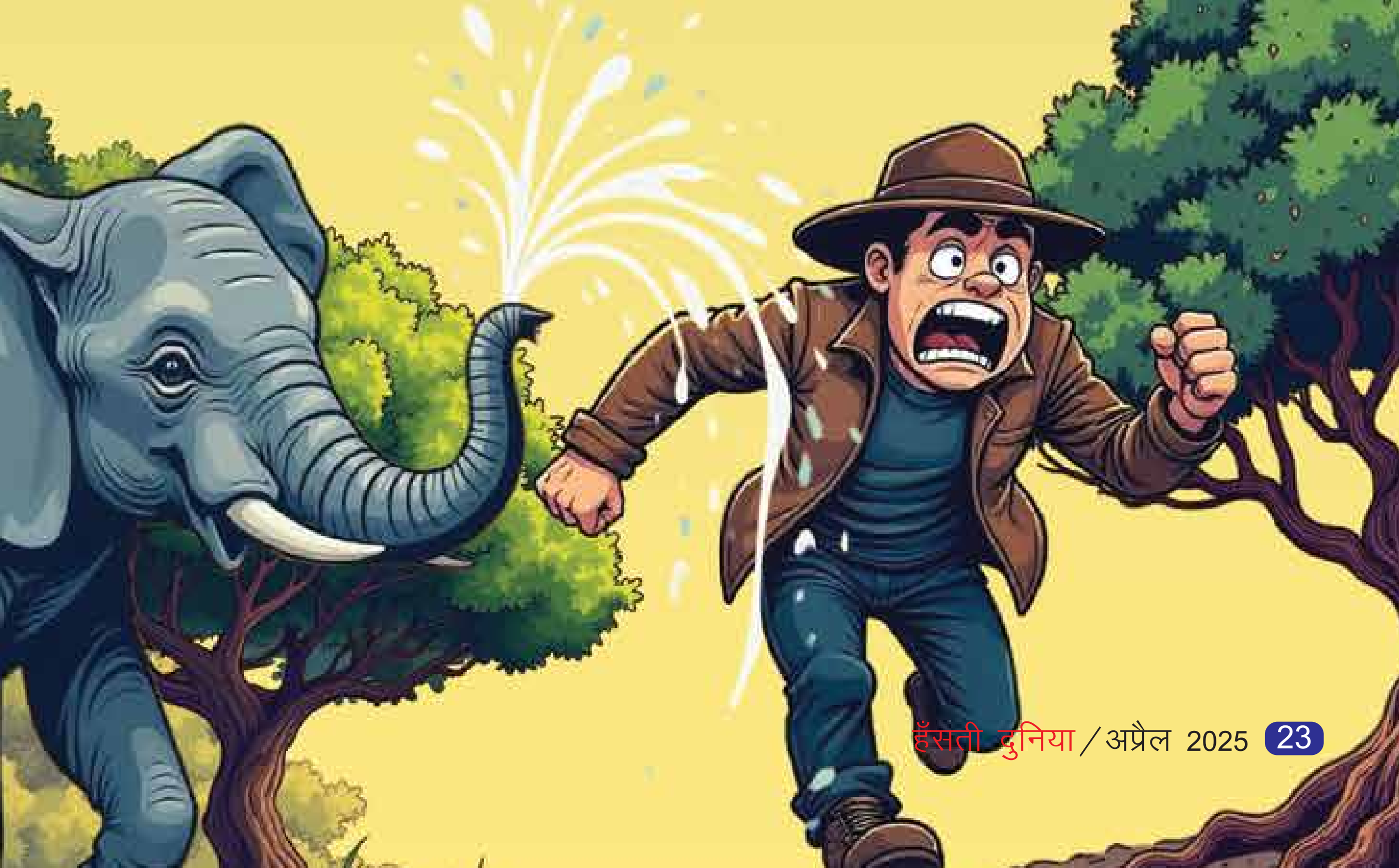

किताबें कैसे बनाई जाती हैं?

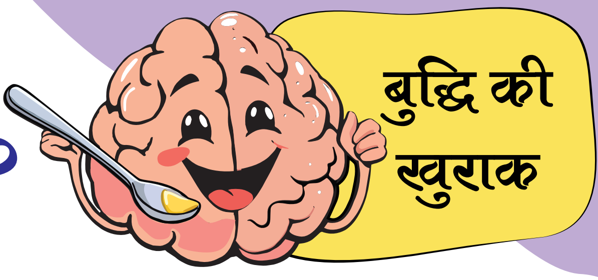

हम सभी किताबें पढ़ते हैं और उन्हें अपने ज्ञान और मनोरंजन का एक अहम हिस्सा मानते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि किताबें कैसे बनाई जाती हैं? किताबों के निर्माण में बहुत सारी मेहनत और एक प्रक्रिया शामिल होती है। आइए जानते हैं किताबें बनाने का पूरा तरीका।

1. लेखन (Writing)

किताब बनाने का पहला कदम है उसका लिखना। सबसे पहले लेखक अपनी सोच और विचारों को शब्दों में बदलते हैं। लेखक अपनी किताब के विषय पर रिसर्च करते हैं और फिर उस पर लिखते हैं। यह काम कई महीनों या सालों तक भी चल सकता है। लेखक को अपनी किताब में हर बात सही और दिलचस्प तरीके से प्रस्तुत करनी होती है।

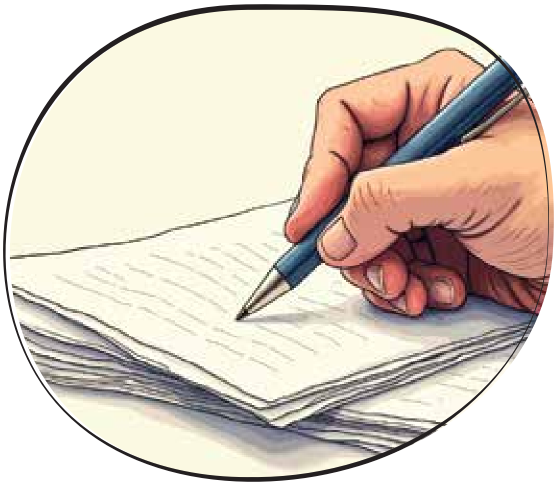

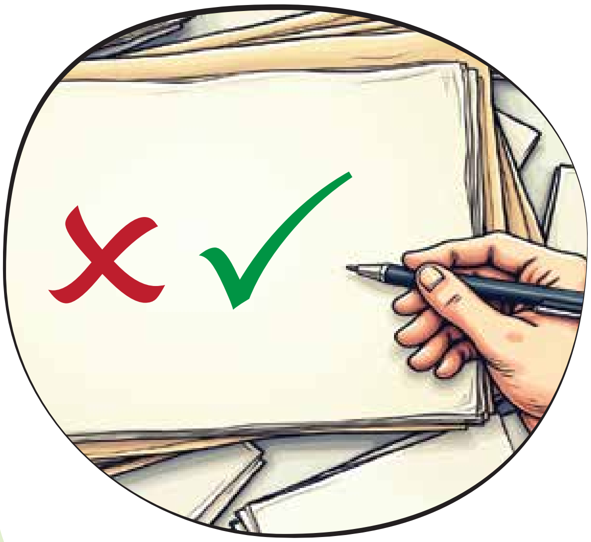

2 संपादन (Editing)

लेखक के द्वारा लिखी गई किताब को फिर एक संपादक पढता है। संपादक यह सुनिश्चित करता है कि किताब में कोई गलतियां न हों, जैसे व्याकरण की गलतियां या तथ्यात्मक त्रुटियाँ। वह किताब को सुधारता है, ताकि वह पाठकों के लिए और भी आकर्षक और समझने में आसान हो।

3. साज-सज्जा (Design)

किताब के पन्नों को आकर्षक बनाने के लिए उसको डिजाइन किया जाता है। इसमें किताब का कवर डिजाइन, पृष्ठों का लेआउट और चित्रों का चयन शामिल होता है। डिजाइनर यह तय करता है कि किताब की हर चीज सुंदर और साफ-सुथरी हो। इसके अलावा, किताब के कवर पर उसका नाम, लेखक का नाम और चित्र भी होते हैं, जो किताब को दिलचस्प बनाते हैं।

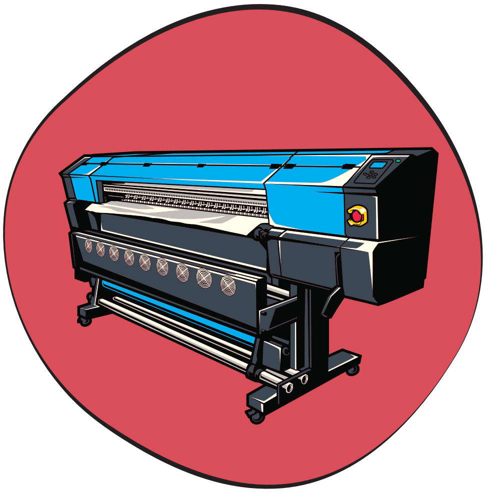

4. प्रिंटिंग (Printing)

जब किताब का लेखन और डिजाइन तैयार हो जाता है, तो उसे प्रिंट करने के लिए प्रेस भेजा जाता है। प्रिंटिंग के दौरान, किताब के पन्ने एक साथ छापे जाते हैं। यह बहुत ही सटीक प्रक्रिया होती है, जिसमें किताब के पन्ने सही तरीके से छापे जाते हैं और उनका क्रम सही रखा जाता है। प्रिंटिंग मशीन में एक बार में हजारों पन्ने छापे जा सकते हैं।

5. बंधाई (Binding)

किताब के पन्ने जब छपकर तैयार हो जाते हैं, तो उन्हें जोड़ने की प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया को बंधाई (Binding) कहते हैं। किताब के पन्नों को एक साथ जोड़ कर, उनकी सिलाई (Stitching) की जाती है और फिर किताब को एक कवर में बांध दिया जाता है। इसके बाद किताब के पन्ने अच्छे से जुड़ जाते हैं और वह एक किताब की शक्ल में तैयार होती है।

सभी भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता जोनल इंचार्ज/ संयोजक/मुखी से सम्पर्क करके प्राप्त कर सकते हैं

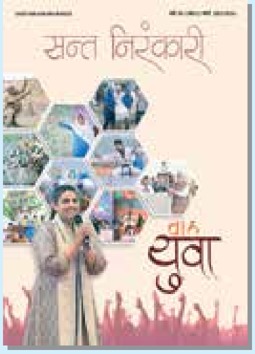

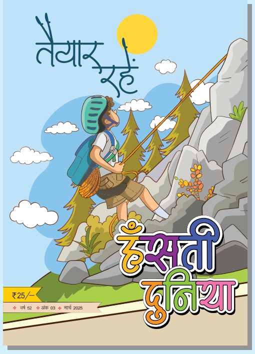

भारत के लिए पत्रिकाओं की सदस्यता दरें निम्नानुसार हैं

अवधि	एक पत्रिका	दो पत्रिका	तीन पत्रिका	प्राप्ति स्थान
एक वर्ष	₹ 400	₹ 600	₹ 800	व्यक्तिगत पते पर
	₹ 300	₹ 500	₹ 700	भवन के पते पर
तीन वर्ष	₹ 1000	₹ 1500	₹ 2000	व्यक्तिगत पते पर
	₹ 700	₹ 1200	₹ 1700	भवन के पते पर
पाँच वर्ष	₹ 1500	₹ 2200	₹ 3000	व्यक्तिगत पते पर
	₹ 1200	₹ 1800	₹ 2600	भवन के पते पर

Subscription rates of Nirankari Magazines for Abroad

Gulf Countries (Dubai Dirham)

Duration	One Magazine	Two Magazines	Three Magazines
One Year	100	180	250
Three Year	240	450	600
Five Year	375	675	900

Australia/New Zealand/ Singapore/Canada

Duration	One Magazine	Two Magazines	Three Magazines
One Year	$ 50	$ 90	$ 120
Three Year	$ 120	$ 220	$ 280
Five Year	$ 200	$ 330	$ 450

United States of America

Duration	One Magazine	Two Magazines	Three Magazines
One Year	$ 40	$ 70	$ 100
ThreeY ear	$ 100	$ 170	$ 240
Five Year	$ 150	$ 260	$ 375

United Kingdom

Duration	One Magazine	Two Magazines	Three Magazines
One Year	£ 30	£ 50	£ 70
Three Year	£ 70	£ 120	£ 170
Five Year	£ 110	£ 190	£ 260

European Countries

Duration	One Magazine	Two Magazines	Three Magazines
One Year	€ 40	€ 70	€ 100
Three Year	€ 100	€ 170	€ 240
Five Year	€ 150	€ 260	€ 375

सन्त निरंकारी : हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी, मराठी, तेलुगू, कन्नड़, गुजराती, बांग्ला और नेपाली
हँसती दुनिया : हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी और मराठी
एक नज़र : हिन्दी, पंजाबी और मराठी

अब नियमित रूप से पत्रिका पायें, परिवार और मित्रों को भी पढायें!

कृपया अन्य पाठकों को भी प्रोत्साहित करके निरंकारी पत्रिकाओं का सदस्य बनायें !

इस सन्दर्भ में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें–
HelpLine: 011-47660360, 859, 9266629841, E-mail: patrika.help@nirankari.org

डॉल्फिन

नाम : इंडियन ओशन हंपबैक डॉल्फिन
वैज्ञानिक नाम : Sousa plumbea
स्थानीय नाम : गादा रेडा
संवर्धन स्थिति : संकटग्रस्त
वर्ग : स्तनधारी (पिल्लों को जन्म देती हैं)
आकार : 2 से 3 मीटर लंबी,
लंबी नुकीली चोंच जैसी थूथन,
150 से 250 किलो वजन
रंग : गहरा राखी रंग

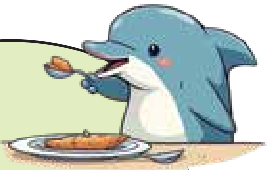

आहार :

बोंबील, बांगड़ा, पापलेट, छोटे मछलियों के झुंड

अस्तित्व के लिए खतरे :

पर्यावरणीय प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, आवास का नाश, अत्याधिक मछली पकड़ना, रासायनिक प्रदूषण

आवास :

किनारे के पास, उथले पानी में, खाड़ी और नदियों के मुहाने के पास यह प्रजाति पाई जाती है। महाराष्ट्र के 720 किमी लंबी तटरेखा पर यह प्रजाति दिखाई देती है, खासकर कोकण तट पर। यह दक्षिण अफ्रीका से लेकर वेस्टर्न इंडोचाइना तक के तटीय क्षेत्र में फैली हुई है, इसके अलावा पूर्वी अफ्रीका, मध्य पूर्व और भारत के तटीय क्षेत्रों में भी पाई जाती है।

प्रजनन का काल :

डॉल्फिन साल भर प्रजनन कर सकती हैं, लेकिन प्रजनन के लिए सबसे अच्छा समय मई से जून तक होता है। गर्भधारण की अवधि 10 से 12 महीने की होती है। मादा एक बार में एक पिल्ले को जन्म देती है। मां अपने पिल्ले की देखभाल लगभग 1 से 3 साल तक करती है।

महत्वपूर्ण जानकारी :

भारत में डॉल्फिन की लगभग 18 प्रजातियां पाई जाती हैं। इस डॉल्फिन को 'हम्पबैक' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसके पीठ पर एक उभरी हुई संरचना होती है। यह महाराष्ट्र की तटरेखा पर सामान्यतरू पाई जाती है। यह एक सामाजिक प्राणी है और एक झुंड में 4 से 35 या उससे अधिक डॉल्फिन होती हैं, जिनमें नर, मादा और पिल्ले शामिल होते हैं। डॉल्फिन भोजन ढूंढने, नावों से बचने और गंदे पानी से मार्ग निकालने के लिए इकोलोकेशन (प्रतिध्वनि) का उपयोग करती हैं। डॉल्फिन आपस में संवाद करने के लिए चूं-चूं की आवाजें करती हैं। इसके नुकीले शरीर, चिकनी त्वचा और चौड़ी पूंछ के कारण यह तेजी से तैर सकती हैं। डॉल्फिन बहुत बुद्धिमान और सामाजिक प्राणी मानी जाती हैं। ये नियमित रूप से सांस लेने के लिए पानी की सतह पर आती हैं, क्योंकि ये स्तनधारी हैं, ये फेफड़ों से श्वास लेती हैं।

मंगल वृक्ष

प्रकृति का वरदान

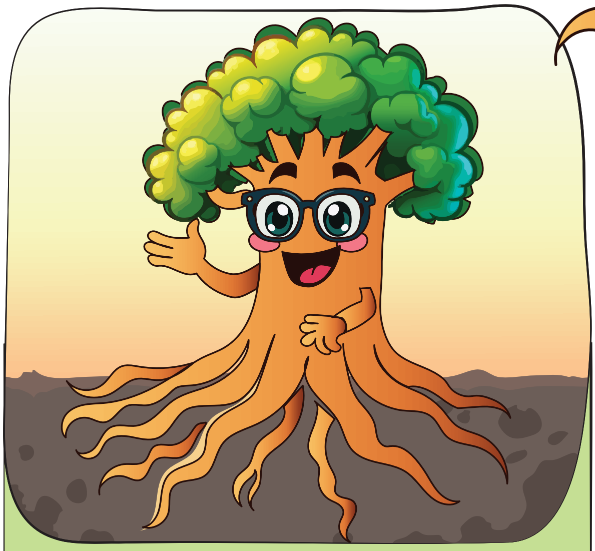

"नमस्ते, प्रिय! मैं मंगल, मैंग्रोव का वृक्ष हूँ, जो माँ धरती का उपहार है। मेरी जड़ें प्रेम, सुरक्षा और संतुलन की प्राचीन कहानियाँ फुसफुसाती हैं। पास आओ, और मैं तुम्हें अपने रहस्य बताऊँगा!"

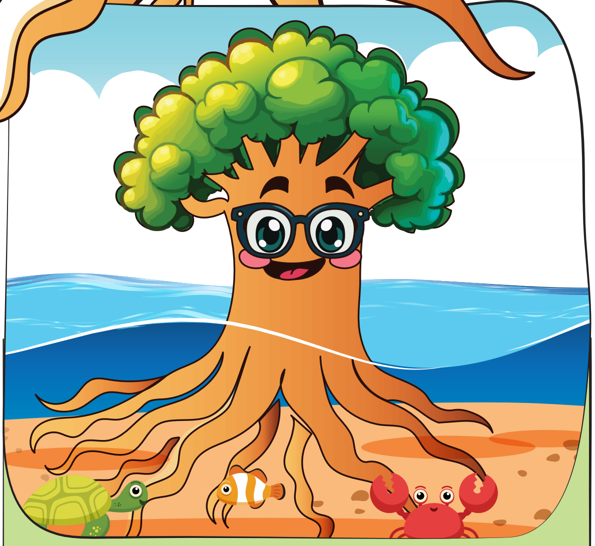

मेरी जड़ें प्रेमपूर्ण बाहों की तरह हैं, जो छोटी मछलियों, प्रिय केकड़ों और गाने वाले पक्षियों को आश्रय देती हैं। जैसे ईश्वर सभी का ध्यान रखते हैं, वैसे ही मैं भी हर प्राणी को छाया और गर्माहट देता हूँ।

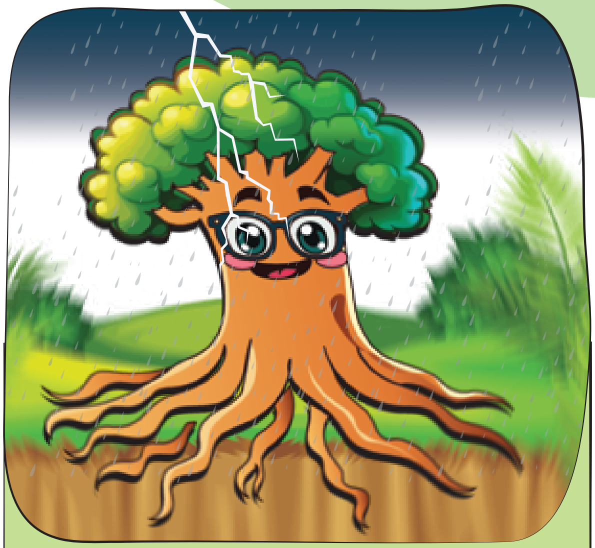

एक दिन, एक भयंकर तूफान आया, शेर की तरह गरजता हुआ! लेकिन मैं अडिग खड़ा रहा, शक्ति की प्रार्थना करते हुए। मेरी जड़ों ने उग्र लहरों को रोक दिया और धरती की रक्षा की। प्रकृति हमेशा उनका साथ देती है जो उसका सम्मान करते हैं!

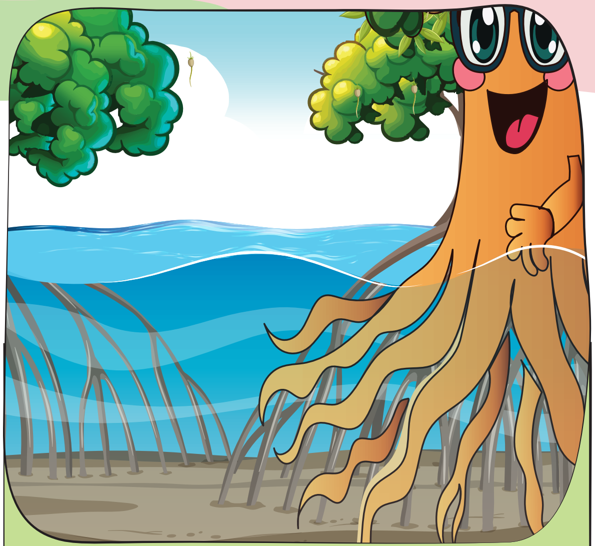

पानी जीवन है, लेकिन वह शुद्ध होना चाहिए! मेरी जड़ें एक पवित्र छन्नी की तरह काम करती हैं, पानी को शुद्ध कर समुद्र तक पहुँचाती हैं। जैसे एक निर्मल हृदय दुनिया में शांति लाता है, वैसे ही स्वच्छ जल जीवन लाता है!

मेरे पत्ते, फल और लकड़ी माँ प्रकृति का उपहार हैं। लोग उन्हें दवा, भोजन और घर बनाने के लिए उपयोग करते हैं, लेकिन केवल उतना ही जितनी जरूरत हो। जीवन का रहस्य आभार से देना और सम्मान के साथ लेना है!

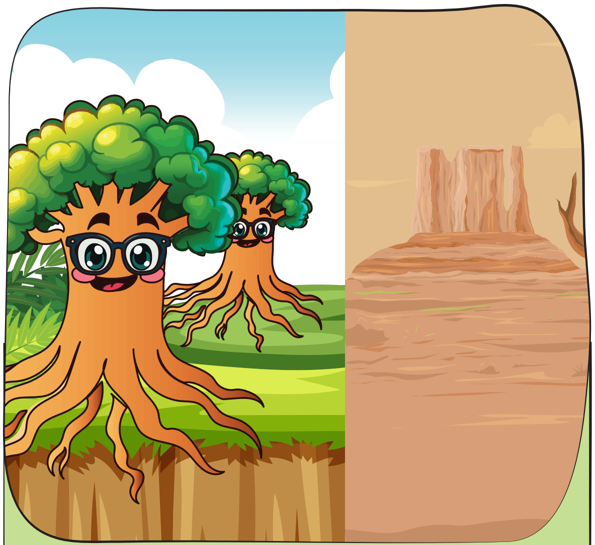

पेड़ संगीत की तरह हैं, जो धरती को संतुलित रखते हैं। जैसे बिना प्रेम के घर अधूरा होता है, वैसे ही मेरी जड़ें धरती को थामे रखती हैं, जैसे दयालुता और विश्वास हमारे दिलों को मजबूत रखते हैं!

यदि तुम मेरी रक्षा करोगे, तो मैं भी तुम्हारी रक्षा करूँगा। मुझे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए, सिर्फ प्रेम, देखभाल और बढ़ने की अनुमति। साथ मिलकर हम धरती को सुरक्षित, सशक्त और जीवन से भरपूर बना सकते हैं!

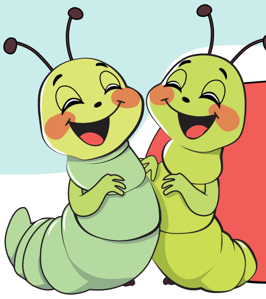

पढ़ो और हँसो

पप्पू : मैंने एक रॉकेट छोड़ा तो सीधा सूरज से टकरा गया।
बंटी : फिर क्या हुआ?
पप्पू : फिर मेरी पिटाई हुई।
बंटी : किसने पीटा?
पप्पू : सूरज की मम्मी ने।

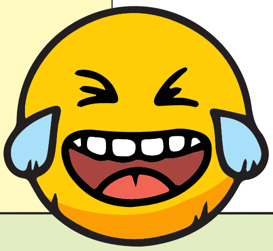

गोलू : रातभर मुझे नींद नहीं आई
मोलू : क्यों?
गोलू : रात भर मैंने सपने में देखा कि मैं जाग रहा था।

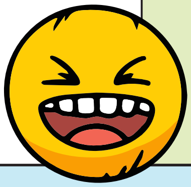

एक पोस्टमैन की नियुक्ति करनी थी। उम्मीदवार से पूछा गया कि सूर्य से धरती कितनी दूर है?
उम्मीदवार बोला – सर! अगर आप मुझे इस रूट पर भेजना चाहते हैं तो मुझे यह नौकरी नहीं चहिए।

बेटा : पिताजी, हिमालय पर्वत कहाँ है?
पिता : अपनी मम्मी से पूछो पता नहीं वह चीजों को इधर–उधर क्यों रख देती है?

चलो घूमने

ताजमहल

ताजमहल भारत के सबसे प्रसिद्ध और सुंदर स्मारकों में से एक है। यह भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा शहर में स्थित है। ताजमहल एक भव्य मकबरा है, जिसे मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था। ताजमहल को सफेद संगमरमर से बनाया गया है और यह अपनी सुंदरता, वास्तुकला और इतिहास के कारण पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

ताजमहल का इतिहास

ताजमहल का निर्माण 1632 में शुरू हुआ था और यह 1653 में पूरा हुआ। मुमताज की मृत्यु के बाद, शाहजहाँ ने उनकी याद में ताजमहल बनाने का संकल्प लिया। ताजमहल की वास्तुकला और उसकी सुंदरता आज भी लोगों को आकर्षित करती है।

यूरोप के विशेषज्ञों के कथानुसार ताजमहल का नक्शा इटली के एक वास्तुकार जिरोनीमो वेरोन्यो ने तैयार किया था। यह बात सर्वप्रथम एक ईसाई धर्मगुरु फादर मेनरिक ने कही थी। फादर मेनरिक सन् 1640 में इसलिए आगरा आये थे

ताजमहल की वास्तुकला

ईरानी या तुर्की आर्किटेक्ट उस्ताद और ईसा मोहम्मद आंफदी नामक वास्तुकार ताजमहल के मुख्य वास्तुकार थे। उन्हें कोका मीमार सिनान आगा नामक ख्याति प्राप्त वास्तुकार ने प्रशिक्षित किया था।

अपने समय के सुप्रसिद्ध माणिककार चिरंजीलाल (दिल्ली) को माणिक मोती जड़ने में निपुणता प्राप्त थी। ताजमहल में माणक मोती जड़ने का काम उसी की देख-रेख में सम्पन्न हुआ। ताजमहल को सफेद संगमरमर से बनाया गया है और इसकी दीवारों पर शानदार नक्काशी की गई है। इसके चारों ओर खूबसूरत बगीचे हैं और यहाँ पर एक विशाल पानी की झील भी है।

ताजमहल के प्रवेश द्वार के पास एक बडा चबूतरा है, और इस चबूतरा में चार संगमरमर के स्तंभ हैं।

ताजमहल का मुख्य गुम्बद इस्माइल खान नामक डिजाइनर ने बनाया था। उसे मेहराब और गुम्बद बनाने के काम में महारत हासिल थी। ताजमहल की गुम्बद की चोटी पर जो स्वर्ण-कलश लगा है, उसका काम लाहौर के एक विशेषज्ञ काजिम खान ने किया था।

ताजमहल भारत की एक अद्भुत धरोहर है और इसकी यात्रा हर किसी के लिए खास अनुभव होती है। यह न केवल भारतीयों के लिए बल्कि विदेशियों के लिए भी एक आकर्षक स्थल है। ताजमहल को देखना और उसके इतिहास को जानना एक दिलचस्प अनुभव है। यदि आप कभी आगरा जाएं, तो ताजमहल की यात्रा जरूर करें और इसके अद्भुत सौंदर्य का आनंद लें!

ताजमहल का दौरा करते समय ध्यान रखें ये बातें

1. ताजमहल के अंदर जाने के लिए टिकट की आवश्यकता होती है। बच्चों के लिए भी टिकट का शुल्क है, लेकिन छोटे बच्चों को मुफ्त प्रवेश मिलता है।
2. ताजमहल में शांति बनाए रखें और कोई भी गंदगी न फैलाएं।
3. ताजमहल की सुंदरता को बनाए रखने के लिए पर्यटकों को संगमरमर की दीवारों और फव्वारों को छूने की अनुमति नहीं है।
4. आप ताजमहल के पास स्थित बगीचे में घूम सकते हैं और फोटो खींच सकते हैं, लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि किसी भी ऐतिहासिक स्थल की इज्जत करें।

- प्रेम सातपूते

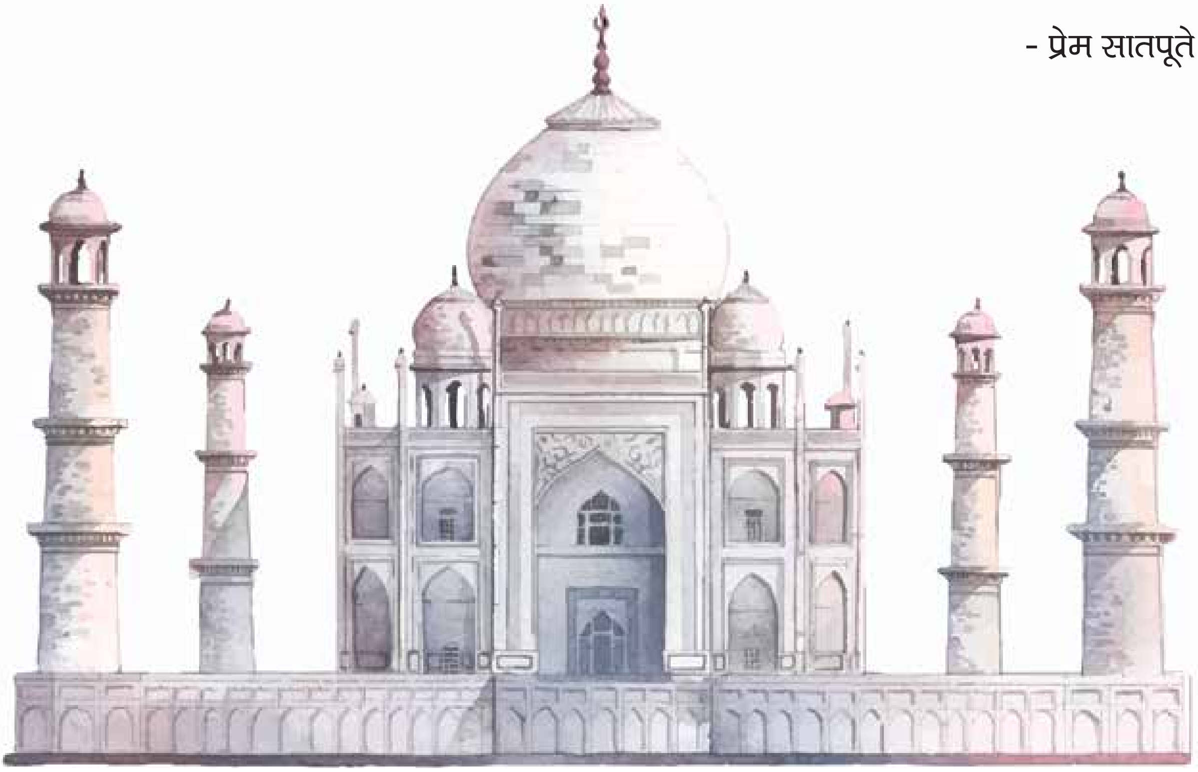

नरक और स्वर्ग का द्वार

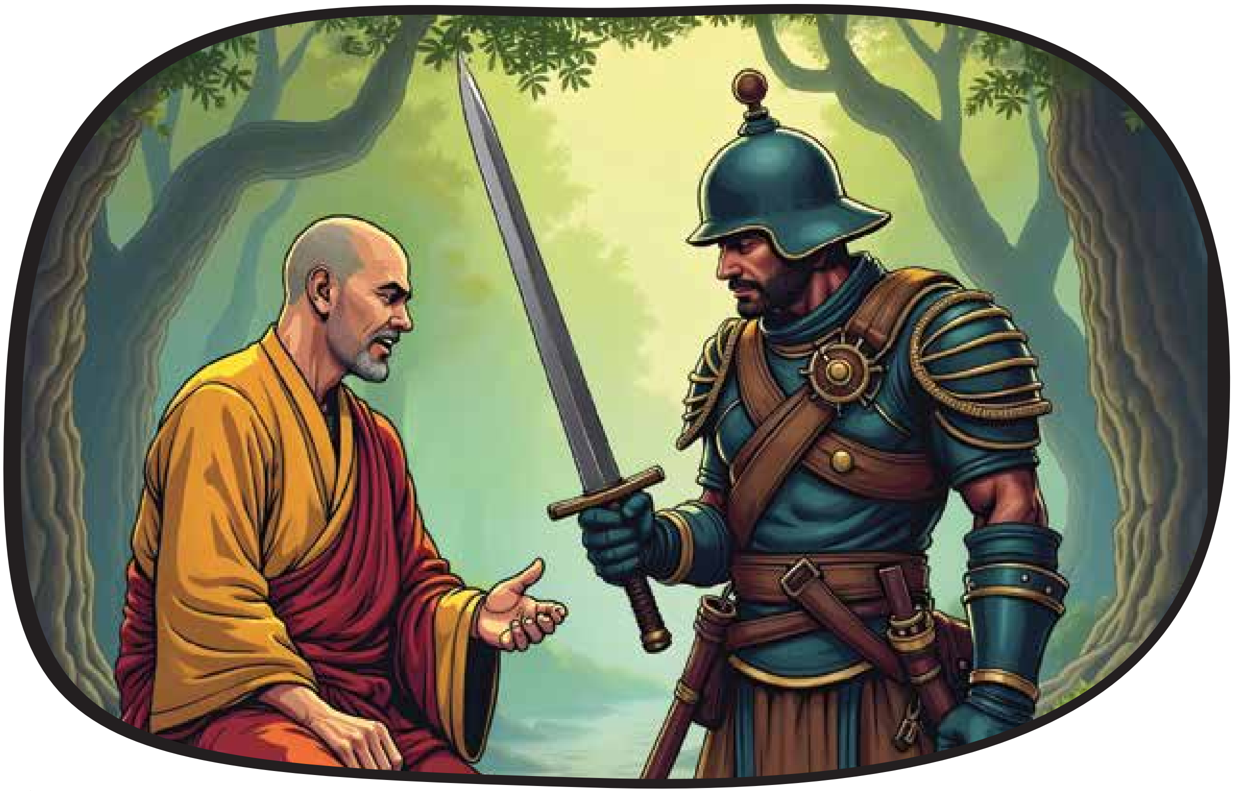

हेकु नामक साधक जंगल में अपनी साधना में लीन थे। एक बार नोबू नामक एक सैनिक उनके पास आया। उसने कहा- देव! एक जिज्ञासा है, जिसने मन को अशान्त कर रखा है। कृपया मेरी जिज्ञासा का समाधान कर मन को शान्ति प्रदान करें।

-कहो मित्र, क्या पूछना चाहते हो?- हेकु ने कहा।

नोबू ने पूछा- देव! क्या स्वर्ग और नरक की बात यथार्थ है?

-तुम हो कौन?- हेकु ने पूछा।

-मैं एक योद्धा हूँ- नोबू ने कहा।

-अरे! तुम एक योद्धा हो? किस राजा ने तुम्हें योद्धा बनाया? तुम तो एक भिखारी जैसे लगते हो।- हेकु ने कहा।

यह सुनकर योद्धा आग-बबूला हो गया। आँखें लाल हो गईं; भुजाएं फड़कने लगीं। उसने म्यान से तलवार निकाल ली और चीखा- खामोश! आगे एक शब्द भी बोला तो तेरा सिर धरती पर लुढ़कता नज़र आएगा।

इन बातों का हेकु पर कोई असर नहीं हुआ। उसने सैनिक का उपहास करते हुए फिर कहा- अच्छा, तो तुम तलवार भी रखते हो? किन्तु लगता है इसकी धार निकम्मी हो गई है। यह मेरा गला नहीं काट सकेगी; इसे म्यान में रख लो।

इतना सुनते ही नोबू ने प्रहार करने के लिए तलवार ऊपर उठाई।

- ठहरो!- हेकु ने कहा- मित्र! यही नरक का द्वार है।

नोबू चकित हो गया। उसने तलवार म्यान में डाल ली और हाथ जोडकर हेकु को प्रणाम किया।

हेकु ने कहा- मित्र यही स्वर्ग का द्वार है।

प्रेरक प्रसंग : उमाशंकर यादव

रास्ता ढूंढें

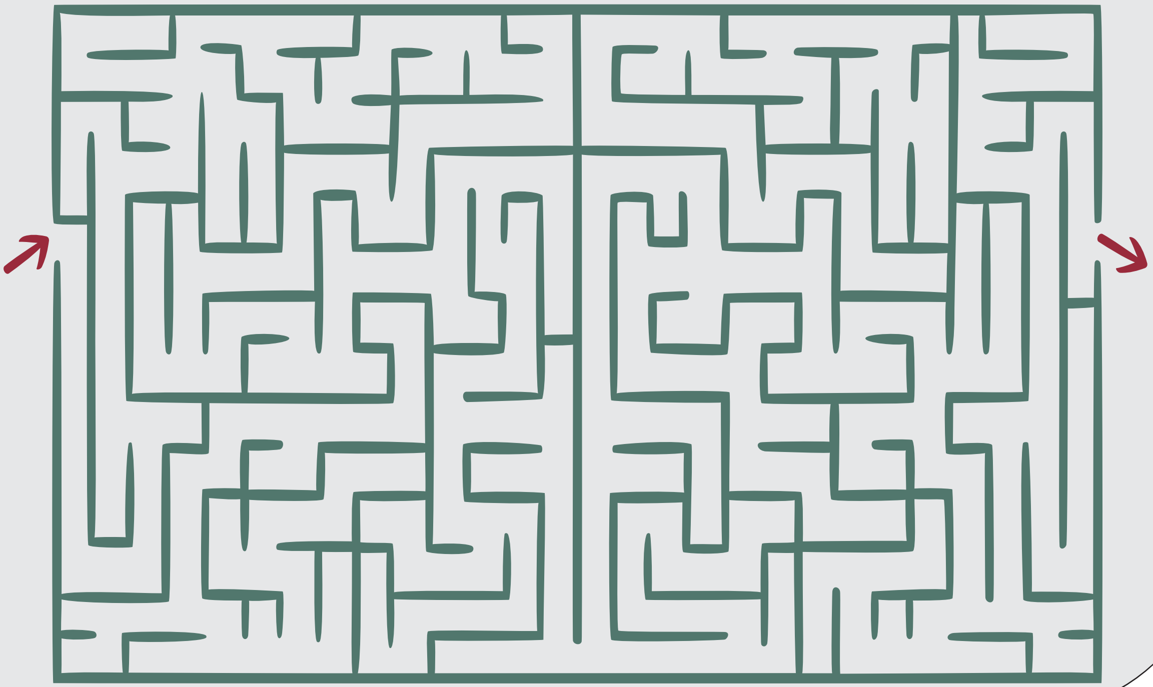

फूलों जैसे लोग

फ्लोरेंस नाइटिंगेल

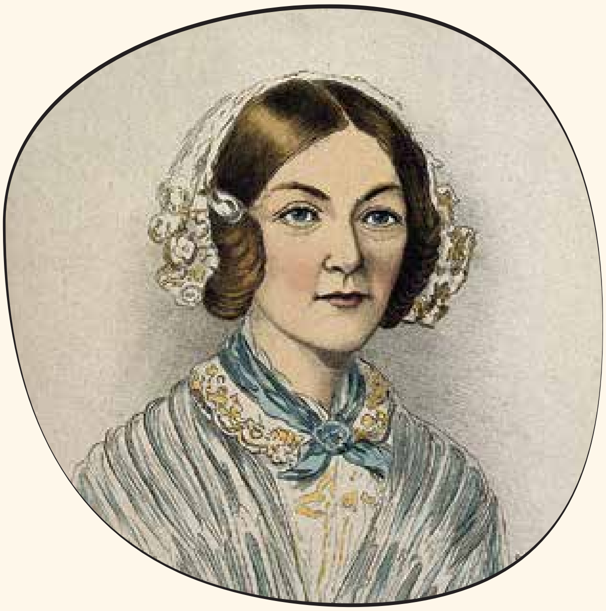

एक दिन एक छोटी-सी लड़की स्कूल से अपने घर जा रही थी तो रास्ते में उसे एक कुत्ता मिला। कुत्ते की एक टांग घायल थी। घाव पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। लड़की को कुत्ते पर दया आ गई। वह उसे अपने घर ले आई। उसने कुत्ते के घाव को गर्म पानी से धोया और उस पर पट्टी बांध दी। करीब एक सप्ताह तक रोज पट्टी करने के बाद कुत्ता बिल्कुल ठीक हो गया।

बच्चों क्या आप जानते हो वह दयालु लड़की कौन थी? वह थी- फ्लोरेंस नाइटिंगेल।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जन्म इटली के फ्लोरेंस नगर में 15 मई 1820 को हुआ था। उसके माता-पिता ने उसका नाम उसी नगर के नाम पर रख दिया, जहाँ वह पैदा हुई थी। उसके पिता का नाम विलियम एडवर्ड नाइटिंगेल और माता का नाम फैनी नाइटिंगेल था।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल बड़ी कोमल हृदय थी। किसी के दुःख को देखकर वह दुःखी हो जाती थी। उसके मन में इच्छा उठती थी कि दूसरे के दुःख को दूर करने के लिए कुछ करें। जब वह थोड़ी बड़ी हुई तो उसे नर्स का काम अच्छा लगने लगा। सारा दिन रोगियों और घायलों की सेवा करना ही उसे जीवन का उद्देश्य लगा। उसने निश्चय कर लिया कि वह नर्स बनेगी। जब उसके माता-पिता को उसकी इस इच्छा का पता चला तो उन्होंने नर्स बनने की अनुमति नहीं दी। वे इस काम को पसंद नहीं करते थे।

जब फ्लोरेंस को माता-पिता की अनुमति नहीं मिली तो उसे बड़ा दुःख हुआ वह उदास रहने लगी। उसके दृढ़-निश्चय को देखकर माता-पिता को भी झुकना पड़ा। उन्होंने उसे नर्स बनने की अनुमति दे दी।

फ्लोरेंस ने अस्पताल में जाकर नर्स का कार्य सीखा। कुछ दिनों बाद उसे लंदन में नर्स संस्थान का अध्यक्ष बना दिया गया। उसने बड़ी निष्ठा और तल्लीनता से अपने काम को किया। इस समय उसकी लगन को देखकर उसके माता-पिता को मानना पड़ा कि उसे उसके मार्ग से हटाना अन्याय होता। उन दिनों इंग्लैंड एक युद्ध में उलझा हुआ था। युद्ध में घायल होकर अनेक सैनिक

अस्पतालों में आने लगे। अधिक गंभीर घायलों को 'स्कूटारी' नामक अस्पताल में लाया गया। सरकार ने इस अस्पताल में रोगियों की देखभाल की जिम्मेदारी फ्लोरेंस नाइटिंगेल को सौंप दी। इससे पहले अस्पताल में घायल सिपाहियों की देखभाल का उचित प्रबंध नहीं था। पर फ्लोरेंस ने अस्पताल की काया पलट दी। वह रात-दिन रोगियों की सेवा में जुट गई। वह स्वयं प्रत्येक रोगी से मिलती थी। वह प्रयत्न करती थी कि किसी रोगी को कोई परेशानी न हो। रात को वह हाथ में लैंप लेकर रोगियों के पास जाती थी। उसे देखते ही रोगियों के चेहरों पर मुस्कान खिल जाती थी। बीमार सैनिक उसे 'लैंपवाली देवी' कहकर पुकारते थे।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने न केवल अस्पताल में ही घायलों की चिकित्सा का प्रबन्ध किया अपितु वह लड़ाई के मैदान में भी गई। वहाँ उसने शिविरों में सैनिकों की चिकित्सा का प्रबंध किया। दिन-रात काम करने से उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। मजबूर होकर उसे इंग्लैंड लौटना पड़ा।

इंग्लैंड में उनका जोरदार स्वागत हुआ। किंग एडवर्ड सप्तम् ने उसे सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया। उसका नाम सारे विश्व में प्रसिद्ध हो गया।

90 वर्ष की आयु में 13 अगस्त 1910 को फ्लोरेंस नाइटिंगेल का निधन हो गया। इंग्लैंड की जनता ने उनकी याद में एक शानदार स्मारक बनवाया।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का विश्वास था कि मानवता की सेवा ही भगवान की सच्ची सेवा है। उन्होंने जीवन भर मानवता की सेवा की, इसीलिए आज भी सारा संसार उनका नाम बड़े आदर से लेता है।

लेख : पृथ्वीराज

लेखकों से निवेदन

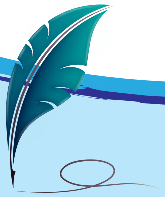

हँसती दुनिया के लेखकों/पाठकों से निवेदन है कि जून 2025 अंक के लिए 'प्रकृति बचाओ' शीर्षक पर आधारित कहानियां, लेख, कविताएं, निबंध, संस्मरण, प्रेरक–प्रसंग आदि 30 मार्च 2025 से पहले **E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org** पर या डाक द्वारा कार्यालय 'हँसती दुनिया' एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज सकते हैं।

नोट : जुलाई 2025 अंक का शीर्षक है **'ऋतुएँ एवं मौसम'**। इसकी रचनाएं 30 अप्रैल 2025 तक भेज सकते हैं।

– सम्पादक, हँसती दुनिया

कविता

मेहनत का फल मीठा होता

जो कानों में मधु-रस घोले,
वे गीत सुनाते चले चलो।
नफ़रत की दीवार तोड़कर,
कदम बढ़ाते चले चलो।।

भेद-भाव के बंधन तोड़ो,
बुरी बात से मुखड़ा मोड़ो।
सबकी पीड़ा हरते जाओ,
मन से मन का नाता जोड़ो।।

रूठों को भी गले लगाकर,
उनको अपनाते चले चलो।
पतझड़ के सब पंख काटकर,
बगिया महकाते चले चलो।

पथ के कांटे चुनते जाना,
संकट से न तुम घबराना।
फौलादी मेहनत के संग-संग
मंजिल को अपनी पा जाना।।

पूरे मन से करो पढ़ाई,
इसमें ही है खूब भलाई।
बीता समय न मुड़कर आता,
लाभ उठाने में चतुराई।।

मेहनत का फल मीठा होता,
मेहनत करते चले चलो।
नफ़रत की दीवार तोड़कर
कदम बढ़ाते चले चलो।।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

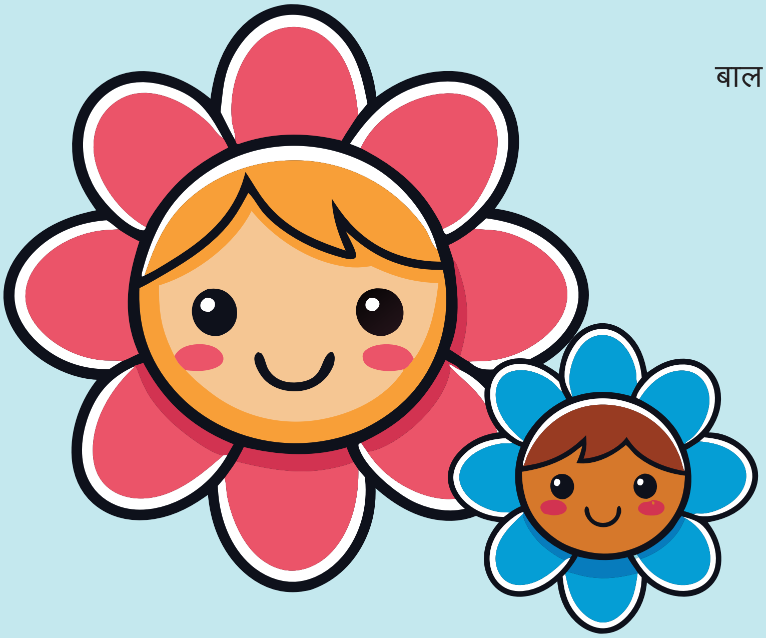

कहानी जगत

नील परी की सीख- नेक बनो

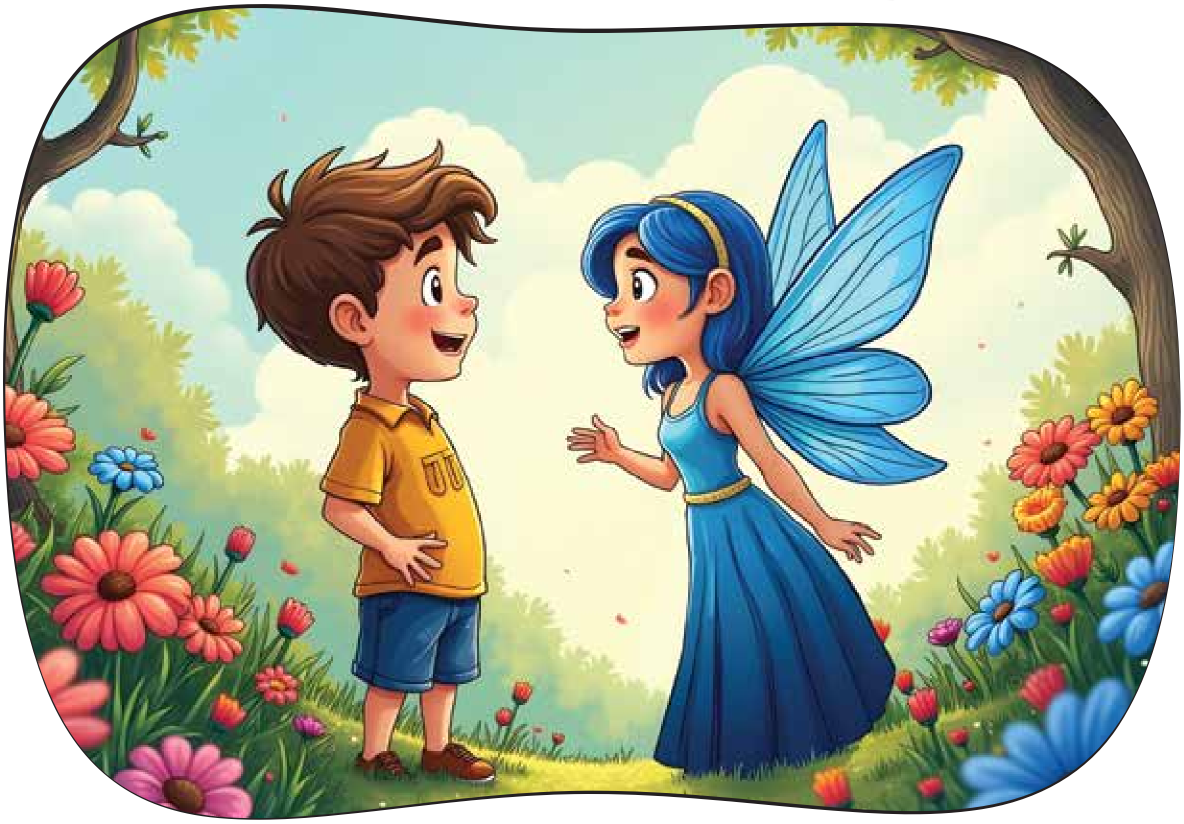

आज रविवार है, छुट्टी का दिन। मनजोत ने पहले ही मम्मी को कह दिया था कि वह सुबह खेलने जाएगा और सुबह वह अपनी मित्रमंडली के साथ पॉर्क में आ पहुँचा। सभी मिल–जुलकर पकड़म–पकड़ाई का खेल खेलने लगे। कितना मजा आ रहा है थक–हारकर सभी बैठ गए।

मनजोत ने देखा कि एक सुंदर–सी तितली उड़ रही है। कभी एक फूल पर तो कभी दूसरे फूल पर बैठती है। मनजोत को उसके पंख बहुत अच्छे लगे। पंख नीले रंग के थे। मनजोत ने सोचा इसे पकड़ लूं तो कितना अच्छा होगा। सभी को दिखाऊँगा तो खुश होंगे। इस किताब में बंद करके स्कूल ले जाऊँगा।

मनजोत तितली के पीछे भागते–भागते बहुत दूर निकल गया लेकिन वह तितली को नहीं पकड़ सका। तभी उसे फुलवारी के पीछे से खनकती–सी हँसी सुनाई दी।

यह कौन हँस रहा है? वह सोच ही रहा था कि तभी उसे फूलों के बीच में हँसता हुआ चेहरा दिखाई दिया। नहीं पकड़ सके न मुझे? मैंने तुम्हें कितना दौड़ाया?

–कौन हो तुम? मैं तो तितली को पकड़ रहा था।

मनजोत ने कहा तो झट से नीलपरी सामने आ खड़ी हुई। वह बोली– अरे बुद्धू मैं हूँ नीलपरी। मैं ही तितली बनकर इधर–उधर उड़ रही थी।

–तुम नीलपरी! अरे वाह! तुम्हारे पंख कितने सुंदर हैं, नीले–नीले हैं। वाकई तुम नीले पंखों से ही बहुत सुंदर लग रही हो। तुम्हारे नीले पंखों की वजह से ही मैं तितली को पकड़ रहा था।

–अरे! मैं ही तो तितली थी मैंने कहा न।

–पर तुम तितली क्यों बनी?– मनजोत ने पूछा।

–दरअसल, हमारे परीलोक में फूल नहीं होते और मुझे फूल बहुत अच्छे लगते हैं। फूलों की खुशबू मुझे बहुत सुहाती है। इसलिए मैं परीलोक से चलकर यानि उड़कर तुम्हारे इस भूलोक में चली आई। मुझसे दोस्ती करोगे?

कहते हुए नीलपरी ने अपना हाथ बढ़ाया।

–क्यों नहीं, कहते हुए मनजोत ने परी का हाथ थाम लिया और बोला– मुझे भी ले चलो न अपने परीलोक में। बोलो ले चलोगी?

–हाँ–हाँ, ले चलूँगी पर पहले मुझे तुम्हारा यह पृथ्वीलोक तो दिखाओ। क्या–क्या है यहाँ?

–हमारे यहाँ सब कुछ है पर कुछ भी नहीं।– मनजोत बोला।

परी ने आश्चर्य से पूछा– क्या मतलब है तुम्हारा? सब कुछ है और कुछ भी नहीं?

–हाँ, तुम्हारे जैसी पंखोंवाली परियाँ नहीं हैं। बाकी सब हैं पेड़–पौधे, फल–फूल, नदी–तालाब, जानवर–पक्षी और हम जैसे इंसान।

–अरे वाह! इतना कुछ?– परी ने फिर कहा– वाकई तुम्हारी धरती तो बहुत सुंदर है। तभी मनजोत के एक पत्थर ऊपर की ओर उछाला। पत्थर के उछालते ही एक पक्का आम पेड़ से नीचे आ गिरा।

मनजोत ने कहा– लो यह खाकर देखो। इसे आम कहते हैं। यह फलों का राजा है।

–यहीं नहीं, केला, अमरूद, चीकू जैसे कितने–कितने फल होते हैं यहाँ। खाओ तो खाते ही रह जाओ।

–परी दीदी! तुम हमारे यहाँ क्यों नहीं रह जाती? मैं तुम्हें खूब घुमाऊँगा।

–अच्छा! मनजोत भैया अभी तो मुझे वापस जाना होगा। मैं फिर जब आऊँगी तुम्हारे साथ बहुत दिन बिताऊँगी और अपने परीलोक भी ले जाऊँगी।

अब मैं चलती हूँ। हाँ, याद आया यह लो मेरी तरफ से संदेश तुम्हारे लिए। इसे याद रखोगे तो खूब तरक्की करोगे।

परी ने मनजोत की हथेली पर कुछ लिखा और फुर्र से उड़ चली।

–अरे सुनो–सुनो तो परी दीदी। फिर कब आओगी बताती जाओ?

–पता नहीं नींद में क्या बड़बड़ा रहा है चल उठ दिन निकल आया है इतनी देर तक सोयेगा तो स्कूल कब जाएगा?– मम्मी ने मनजोत को जगाया तो वह आँखें मलता हुआ बोला– कहाँ है परी? नीले पखोंवाली परी।

–चल पगले सपने ही देखता रहता है।

मनजोत को समझते देर नहीं लगी कि वह 'नीलपरी की सीख– नेक बनो' वाला पाठ पढ़ते–पढ़ते सो गया था इसलिए नीलपरी उसके सपने में आ गई।

अरे हाँ, परी ने उसकी हथेली पर संदेश लिखा था। उसने हथेली को उलट–पलट करके देखा। हथेली तो खाली थी लेकिन हथेली के नीचे पुस्तक में नीलपरी की सीख– नेक बनो वाली पंक्तियों में लिखा था–

मैं सपनों की रानी, नील परी तुम्हारी,
इन पंखों के कारण तुमको लगती प्यारी।

सीख मेरी सुन लो, राजा भैया प्यारे,
खूब लगन से पढ़–लिखकर बन जाओ तुम न्यारे।

प्रेम–नम्रता मिलवर्तन से, इंसान बनो महान,
ज्ञान–कर्म के जीवन से बनो देश की शान।

एक बनो और नेक बनो, सबका बनो सहारा,
दुखियारों की सेवा करके इंसान बनो तुम प्यारा।

आपस में मिलजुलकर रहना मुख पर मीठे बोल,
सबको तुम खुशियाँ बाँटो यही जीवन का मोल।

बाल कहानी : जगतार चमन

एक समय की बात है

स्कूल प्रोजेक्ट में एकता

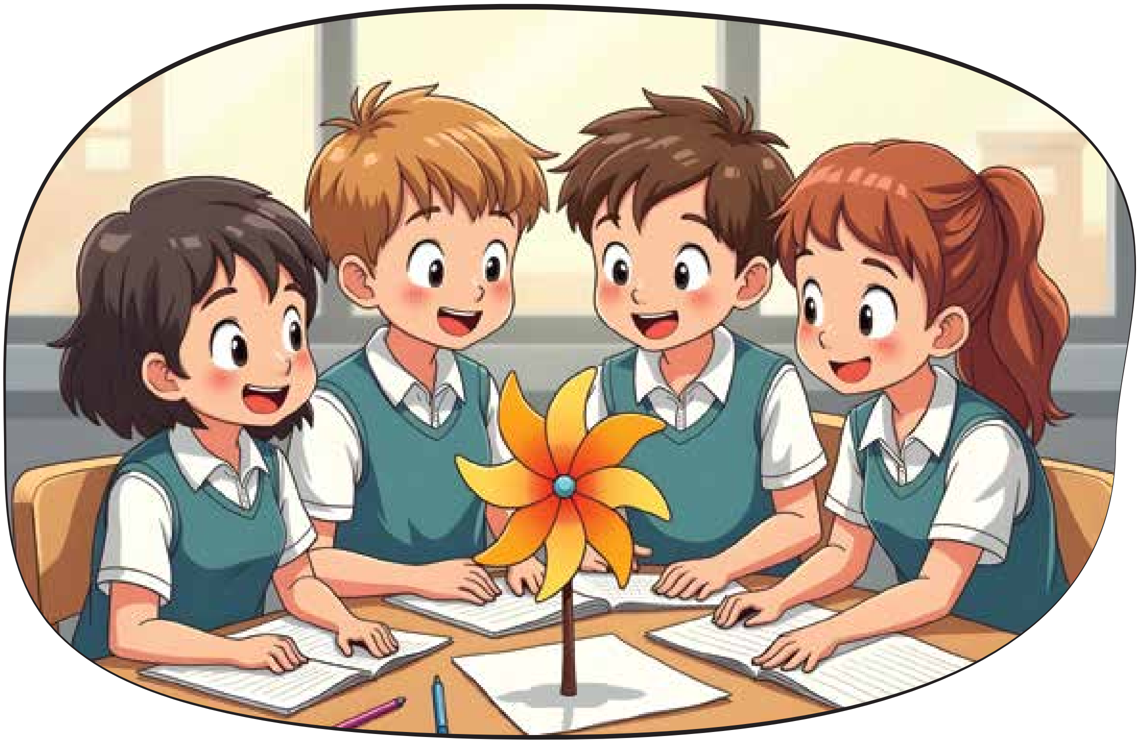

रवि, नेहा, आर्यन और सिया एक ही कक्षा में पढ़ते थे। एक दिन उनके शिक्षक ने कक्षा के सभी बच्चों को एक ग्रुप प्रोजेक्ट दिया। रवि के ग्रुप को पर्यावरण संरक्षण पर एक मॉडल बनाना था। सभी बहुत उत्साहित थे और जल्दी से काम शुरू करना चाहते थे। लेकिन जैसे-जैसे काम बढ़ने लगा, समस्याएँ भी सामने आने लगीं।

रवि चाहता था कि प्रोजेक्ट में अधिक चित्र और रंगों का उपयोग हो, जिससे वह आकर्षक दिखे। नेहा को रिसर्च और डेटा इकट्ठा करना पसंद था, लेकिन उसे बाकी कामों में दिलचस्पी नहीं थी। आर्यन चाहता था कि सब कुछ जल्दी पूरा हो

जाए, इसलिए वह जल्दबाजी कर रहा था और बिना योजना बनाए ही काम आगे बढ़ा रहा था। दूसरी ओर, सिया को कला और सजावट पसंद थी, लेकिन उसे तकनी. की चीजों में रुचि नहीं थी।

धीरे-धीरे सभी अपने-अपने तरीके से काम करने लगे और आपस में तालमेल की कमी होने लगी। कोई किसी की बात नहीं सुन रहा था, और हर कोई अपनी पसंद का काम करना चाहता था। इससे उनका प्रोजेक्ट अधूरा रह गया और समय भी बर्बाद हो गया।

अगले दिन, उनके शिक्षक ने उनसे बातचीत की और कहा, अगर तुम सब अलग-अलग दिशा में काम करोगे, तो कभी सफल नहीं हो पाओगे। लेकिन अगर तुम एक टीम की तरह काम करोगे और एक- दूसरे की ताकत को समझोगे, तो प्रोजेक्ट जल्दी और अच्छा बनेगा।

बच्चों ने अपनी गलती समझ ली और मिलकर एक नई योजना बनाई। अब नेहा ने किताबों और इंटरनेट से रिसर्च की, जिससे प्रोजेक्ट की जानकारी मजबूत बनी। रवि ने आकर्षक पोस्टर और चित्र बनाए, जिससे प्रोजेक्ट सुंदर और दिलचस्प दिखने लगा। आर्यन ने समय प्रबंधन की जिम्मेदारी ली और सभी को सही समय पर काम पूरा करने के लिए प्रेरित किया। सिया ने प्रोजेक्ट को सुंदर और व्यवस्थित बनाने का काम संभाला, जिससे वह और भी आकर्षक बन गया।

जब सभी ने अपनी ताकत के अनुसार काम किया, तो उनका प्रोजेक्ट समय पर पूरा हो गया और सबसे अच्छा प्रोजेक्ट चुना गया! सभी को एहसास हुआ कि अगर वे मिलकर काम करें, तो किसी भी चुनौती को पार कर सकते हैं।

कहानी से सीख

- एकता में शक्ति होती है।
- सभी की अलग-अलग क्षमताएँ होती हैं, और जब वे मिलती हैं, तो बड़ा काम भी आसान हो जाता है।
- टीमवर्क से मुश्किल काम भी जल्दी और अच्छे से पूरे हो जाते हैं। जब हम साथ काम करते हैं, तो सफलता हमारे कदम चूमती है!

Voice DIVINE
Kids Divine
ek ruhani muskaan
NEWS DIVINE
SANT NIRANKARI MISSION
SNM MOBILE APP
App Store
Google Play
सुनो तराने नए पुराने
Nirankari Radio
Bhakti Sangeet
महफ़िल ए रूहानियत
Mehfil-E-Ruhaniyat
SOUL VIBES
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

New Episode uploaded on the 1st & 16th of every month

kids.nirankari.org
New Episode uploaded on the 5th of every month

www.nirankari.org
New Episode uploaded on the 10th of every month

IT'S LIVE, DOWNLOAD NOW

nirankari.org
New Episode uploaded on the 20th of every month

Special programme

New Episode uploaded on the 23rd of every month

New Episode uploaded on the 27th of every month

Download The App

Sant Nirankari Mission "SNM" App
The application is available for the iOS & Android smartphones.

Download on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

Scan QR code

Scan QR code to download Sant Nirankari Mission "SNM" App

For iOS Devices

For Android Devices

Registered with the Registrar of Newspapers
For India Under RNI No. 25672/1973

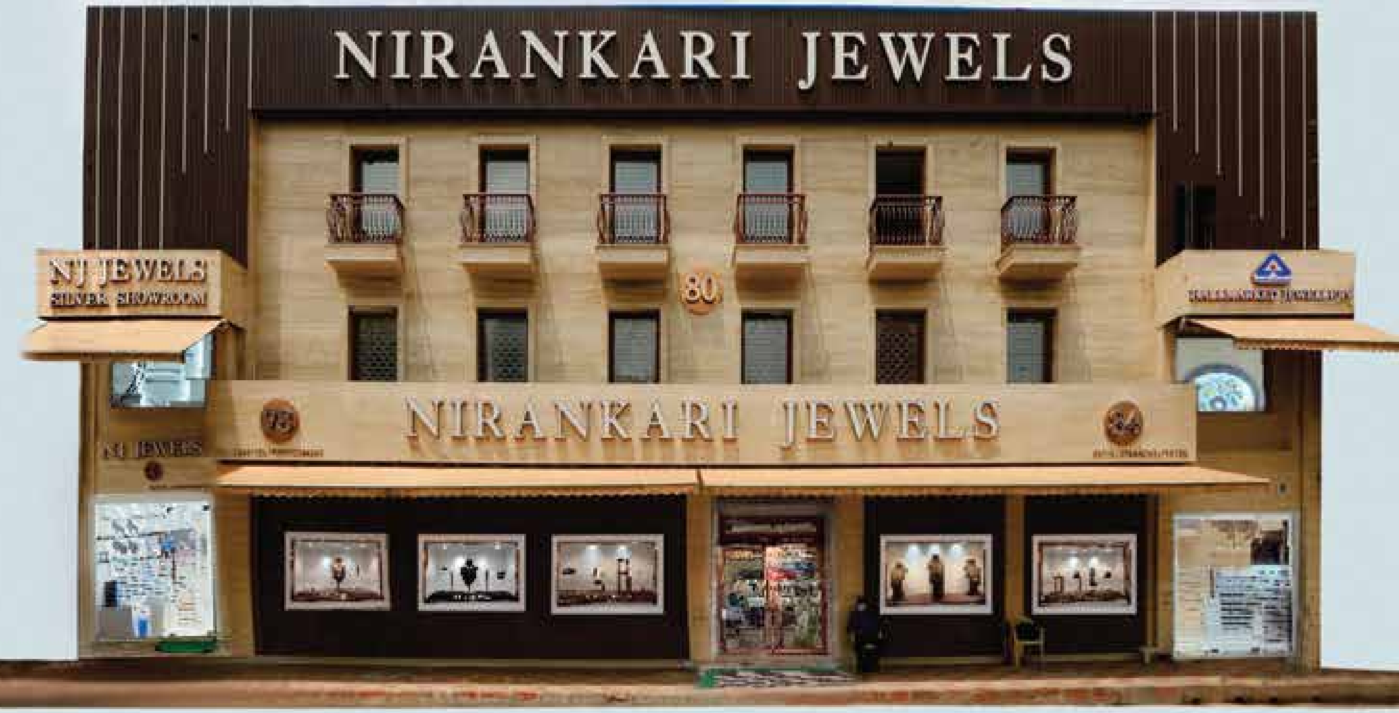
NIRANKARI JEWELS
NJ JEWELS
SILVER SHOWROOM
80
HALLMARKED JEWELLERY
78
NIRANKARI JEWELS
84
NJ JEWELS

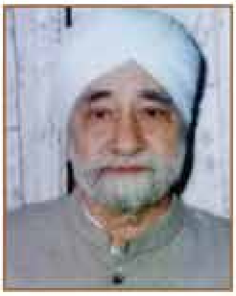

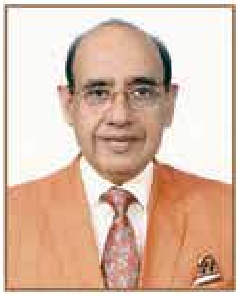

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

☎ 011-42870440, 42870441, 47058133
✉ nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed
Customer Care : 9818883394